वर्ष 3, अंक 4, अप्रैल 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका मूल्य मात्र 3/ रुपये

अंक 4, मार्च 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका
मात्र ... रुपये

# विश्व स्नेह समाज

## चार कहानियाँ

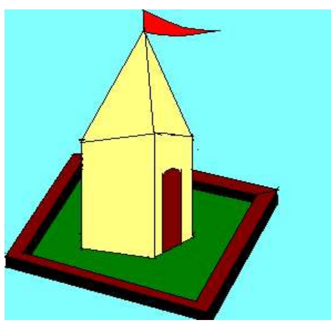

## आखिर कब तक चलेगा यह नाटक

**सुनील जैन**
महानगर अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी
इलाहाबाद

सेवा में,
श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी
प्रधान संपादक, 'विश्व स्नेह समाज'

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि इलाहाबाद से प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' आगामी अंकं 'इलाहाबाद का विकास एवं डॉ० जोशी का योगदान' विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है.

इलाहाबाद के विकास संदर्भ में डॉ० जोशी जी ने जितना कुछ किया उसको शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता है. उनकी विकास गति जिस रफ्तार से दौड़ी है उसको पैमाने में नहीं आका जा सकता है. हमारा जनता से यहीं निवेदन है कि अगर इलाहाबाद को विकास की आंधी में तुफानी दौर से आगे बढ़ाना है तो डॉ० जोशी को आगामी लोकसभा चुनाव में भरपुर सहयोग देकर उनका आत्मबल बढ़ाये

श्री द्विवेदी ने यह सच्चाई के पथ को उजागर करने का जो बीड़ा उठाया है वह वाकई काबिले तारीफ है. इसके लिए मैं स्नेह परिवार को हार्दिक बधाई देता हुं.

(सुनील जैन)

अटल बिहारी जिन्दाबाद

डॉ0 जोशी जिन्दाबाद

**ई०उदयभान करवरिया**
विधायक, बारा, इलाहाबाद

निवासः
कल्याणी देवी,
इलाहाबाद

सेवा में,
श्री जी.के.द्विवेदी जी
प्रधान संपादक, 'विश्व स्नेह समाज'

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है डॉ.0 जोशी के ऊपर आपने ने एक विशेषांक निकालने का निर्णय लिया है. यह निर्णय डॉ. जोशी के कृयाकलापों को देखते हुए निःसन्देह उचित है. पत्रकारिता का यहीं कार्य ही होता है कि वह सच को उजागर करें. डॉ0 जोशी ने इलाहाबाद में विकास की जो गंगा बहायी है उसका कोई जबाब नहीं है. उनके द्वारा कराये गये विकास कार्य अपने आप में एक इतिहास को समेटे हुए है. मेरी आम अवाम से यही गुजारिश है कि विकास पुरुष एवं विज्ञान पुरुष डॉ. जोशी को विजयी बनाकर अपने जिले को विकसित बनायें.

इस कार्य के लिए स्नेह परिवार को हार्दिक बधाई.

(ई0 उदयभान करवरिया)

पीते ही लव हो जाये, सुस्ती को दूर भगाए

# 124 नम्बर बीड़ी

सदा प्रयोग करें

बीड़ी का चित्र
डालना हैं

निर्माताः एच.डी.ए.पी.एम., सहसो इलाहाबाद

वितरकः
रामखेलावन एण्ड संन्स, 96,कोठापार्चा, इलाहाबाद

पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें

# घड़ी

डिटर्जेन्ट केक

NET WT.
WHEN
PKD. 250G

M.R. Price Rs.
5.50
incl. of all taxes

वर्ष : 4, अंक : 4, अप्रैल 2004

विश्व स्नेह समाज
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सहायक संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

विज्ञापन प्रबंधक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला

संयुक्त संपादक
मधुकर मिश्रा

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

**i=O;ogkj dk irk %**
,y-vkbZ-th-&93] uhelj k;] eq.Msjk] bykgkckn
eks0%3155949 ,l0Vh0Mh0 | a0 %0532&2655595

**lEikndh; dk;kZy; %**
,e0Vsdd EI;wVj ,tqds'ku lsUVj] ikoj
gkml ds ikl] /kqU.k] bykgkckn
☎ (0532) &3155949] 2552444

**iath;u la[;k**
(R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

**Mkd iath;u la[;k%**
,Mh-306@2003&05

**O;wjks dk;kZy;**
vkpk;Z jkepUnz 'kqDy uxj] Hkq[kSyh dkWyksuh]
nsofj;k ☎(05568)225085

ewY; ,d izfr %3#i;s
okf"kZd ewY; %30-00 #i;s ek=
fof'k"V lnL; %100-00 #i;s ek=
vkthou %1100-00 #i;s ek=

# अपनी बात

आपकी विश्व स्नेह समाज पत्रिका का हर अंक आपका मार्ग दर्शक एवं सहयोगी है. साथ ही संकलन योग्य. अभी 'पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक' पत्रकारिता के क्षेत्र में हो रहे रद्दोबदल, गुणधर्म एवं पत्रकारों के कार्य का नीर–क्षीर विवेचन का सुन्दर निर्दशन हमारी अतिथि सम्पादिका ने बड़े बिदोंस रुप में किया.

वास्तव में आज ऐसी साहित्यिक पत्रिकाओं की स्थिति जो देश के विभिन्न मार्गो में बहुसंख्य पाठको तक पहुँच पाती है, अच्छी नहीं है. हिंदी की पत्रिकायें ही नहीं, अधिकांश संपादक ऐसे भी है जिन्हें सम्पादन और संकलन में अन्तर करने का भी ढंग नहीं है. कुछ ऐसे भी है जो पत्रिका के बहाने अपने अहं नेतागिरी की दुकान खोल बैठ गये है और अपने एकाधिकार वादी तेवर दिखा रहे है. उन्हें देखकर मुझे बरबस दया आती है कि क्या ऐसी पत्रिका दीघार्यु एवं निरोगी हो सकेगी?

दरअसल ऐसे संपादक अपनी पत्रिका को चद्र हांस के रुप में ही इस्तेमाल कर रहे है और कुछ निरीहा लेखक अपनी गर्दन की सलामती के लिए उनकी एकाधिकार वादी संस्कृति हाथ जोड़ कर स्वीकार कर रहे है जो भी है यह स्थिति कतई ठीक नहीं है पत्रकारिता के लिए.

विश्व स्नेह समाज का सदैव यही प्रयास रहेगा कि इसमें लेखक एवं सम्पादक का रिश्ता लयात्मक एवं शास्त्रीय हो. इस पत्रिका के माध्यम से जनचेतना, जागे. हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को समझे और अच्छी पत्रिकाओं को पढ़े क्योंकि 'अध्ययन शीलता सुख दुःख एवं सम्पत्ति विपत्ति दोनों परिस्थितियों में सहायक होती है. विद्या ने स्वाध्याय की महिमा को जानते हुए इसे सन्मार्ग दर्शक सखा की संज्ञा दी है.'

आशा है विश्व स्नेह समाज इस कसौटी पर नितान्त खरी उतरेगी. होली की शुभकामनाओं के साथ आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में

**फागुन मन को रंग गई, सरसो स्नेह संग।**
**घृणा द्वेष को घोट कर बसंत पिलायी भंग।।**

कुसुमलता मिश्रा 'सरल'

# कौन कहाँ–


1. आपके विचार स्नेह के साथ. 5
2. विकास एवं विज्ञान पुरुष डॉ. जोशी 6
3. डॉ0 जोशी बाहर जितने कठोर अंदर से उतने ही कोमल है 8
4. डॉ0 जोशी स्वदेशी के प्रबल संमर्थक हैं 9
5. डॉ0 जोशी द्वारा इलाहाबाद में कराये गये प्रमुख विकास कार्य 10
6. एक नजर डॉ. जोशी का एक व्यक्तित्व 11
7 विज्ञान के प्रति समर्पित डॉ0 जोशी 13

इलाहाबाद विशेषांक निकालने पर हार्दिक

**गुप्त रोगों का सफल ईलाज**

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोगों का सफल ईलाज किया जाता है.

## ✚ हकीम एम0शमीम

SC. UM(CAL) Reg.

**होटल समीरा**
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन,इलाहाबाद

**मिलने का समयः**
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9से रात्रि 8 बजे तक।

*रक्खे सबकी ख़बर,*
*रक्खें सबपे नजर*

**हिन्दी साप्ताहिक**

# द हंगामा इंडिया

**इलाहाबाद व देवरिया से एक साथ शीघ्र प्रकाश्य**

## फूलपुर संसदीय क्षेत्र से सपा प्रत्याशी विधायक अतीक अहमद को अपना कीमती मत देकर विजयी बनायें

मा0अतीक अहमद

निवेदकः
सीमा श्रीवास्तव
न्यू अमर डेरी, 34, गाड़ीवान टोला, इलाहाबाद 2655168

BAJAJ **Tempo** LTD.
**शानदार फाइनेन्स**

## मे0 रोहन आटो मोबाइल्स

बैद्यनाथ कम्पनी के सामने मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद फोन: 2696683,269751
मो. 9839052295 **शाखा:**१. मामा भांजा का तालाब, पुलिस चौकी, रीवां रोड, इलाहाबाद
२. मेजा रोड चौराहा, मेजा, इलाहाबाद वर्कशाप: ९३/४, लेबर कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद

संस्थापित :1987 ☎ 2636421
उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

# श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)
(बालक / बालिकाओं)

**प्रबंधक**
अनिल कुशवाहा

**प्रधानाचार्या**
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

# आपके विचार स्नेह के साथ

प्रिय श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी,

राष्ट्रपति जी को प्रेषित आपके पत्र के संदर्भ में, जिसमें आपने उनसे स्नेहालय(अनाथाश्रम एवं बृद्धाश्रम) का शिलान्यास करने का अनुरोध किया है.

मैं आपको यह सूचित करना चाहता हूँ कि राष्ट्रपति जी ने हाल ही में गोरखपुर की यात्रा की थी. अत: अभी निकट भविष्य में उनकी गोरखपुर की यात्रा का कोई भी कार्यक्रम नहीं है.

शुभकामनाओं सहित।

**आर.के. प्रसाद**
राष्ट्रपति के निजी सचिव
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली–११०००४

आदरणीय संपादक महोदय
अभिवादन स्वीकारें
विश्वास है स्वस्थ व सानन्द होंगे. 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका में प्रकाशनार्थ दो रचनाएं प्रेषित कर रहा हूँ. कृपया पत्रिका में स्थान देकर अनुग्रहित करें. नववर्ष की अनंत शुभ–कामनाएं

स्नेहाधीन
**प्रकाश सूना**
मुरलीधर सदन,187–बी,गॉधी कॉलोनी, निकट गॉधी वाटिका, मुजफ्फरनगर,251001

परम आदरणीय,
द्विवेदी जी, सादर नमन
आप द्वारा प्रेषित पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' प्राप्त हुई धन्यबाद, काफी सोचने के बाद भी ध्यान में नहीं आ रहा है कि यह पत्रिका कहां से आई यानि इसे मुझे प्रेषित करने वाला कौन सज्जन पुरूष है. मैंने पत्रिका में प्रकाशित आपके सम्मानित सम्पादक मंडल पर भी काफी गौर किया परन्तु कोई नाम समझ में नहीं आया. पत्र लिखते–लिखते शायद कुछ याद आया कि मेरी आपकी भेंट शायद ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की बैठक में लखनऊ में हुई है. कृपया पत्र द्वारा मेरी उक्त जिज्ञासा शांत करने की कृपा करें.
आपकी सम्मानित पत्रिका का अवलोकन किया पत्रिका पसंद आयी. लेकिन इसमें अभी कुछ और सुधार की गुंजाइस महसूस हो रही है और मैं समझता हूं वह भी समय के साथ–साथ ठीक हो जाएगी. कुल मिलाकर आपका प्रयास काफी सराहनीय है. इस हेतु आप सभी लोगों को मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार हो आज के इस युग में भी आप इतने कम मूल्य पर आप समाज को एक अच्छी सामग्री उपलब्ध कराा रहे हैं यह वास्तव में सराहनीय है. मेरे लायक कोई सेवा हो तो कृपया निःसंकोच लिखें. अत में पत्रिका भेजने हेतु पुनः धन्यबाद. पत्र उत्तर देने की कृपा करें. निवेदन है कि कृपया निरंतर पत्रिका मिले तो और अच्छा रहेगा.

आपका शुभेच्छु
**शरद कपूर**
जिला अध्यक्ष, ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन, उ.प्र. खैराबाद, सीतापुर

मुहर्तम, आदाब
आपका नवाज़िशनामा और पत्रिका प्राप्त हुई. धन्यबाद.
मैं इस वक्त 'कानपुर के ग़ज़ल गो' में तरतीब दे रहा हुं. मसरुफ हुं.
आपने जवाब देने में काफ़ी देर लगा दी, इस लिए आपका कार्य अभी कुछ वक्त तक न हो सकेगा, आपका ही

**चॉद मियॉ 'तैयब'**
105/129, जुबली कॉलेज रोड, चमनगंज, कानपुर–208001

आदरणीय सम्पादक जी,
पत्रिका प्राप्त हुई. सचमुच आपने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है. प्रकाशित सामग्री पठनीय व संग्रहणीय है. कुशल सम्पादन हेतु बधाई.

भवदीय
**कमलेश मौर्य 'मुदु'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री
नवोदित साहित्यकार परिषद
बिसवां, सीतापुर, उ.प्र.

सेवा में,
परमआदरणीय सम्पादक महोदय,
'विश्व स्नेह समाज' परिवार को मेरा शत्–शत् नमन!
सदा यूँ ही, खिलता रहे स्नेह समाज का चमन। मैं 'विश्व स्नेह समाज' मासिक पत्रिका का जुलाई 03 का अंक इत्तफ़ाकन कहीं पा गया, और सम्पूर्ण पत्रिका पढ़ डाला। पत्रिका में विलीन सभी बातें मुझे बहुत ही अच्छी लगीं. सभी कहॉनिया बेहतरीन एवं दिलकश लगी. पत्रिका के सभी स्तम्भ एक से बढ़कर एक है. मुझे पत्रिका पाकर एवं पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई. पत्रिका के कार्यकारिणी विभाग को मैं सहृदय धन्यबाद देता हूँ जिन्होंने ऐसे लाजबाब पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया है। मैं भी आपके उक्त पत्रिका का सदस्य, संवाददाता, ब्यूरो तथा विज्ञापन एजेन्ट बनना चाहता हूँ. वैस मै पेशे से एक कवि/लेखक तथा विद्यार्थी हूँ मेरी शिक्षा स्नातक तक पूरी हो चुकी है. अपनी मौलिक रचना भी पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहता हूँ. अतः आप वर्तमान माह मार्च 04 का अंक एवं सदस्यता ग्रहण करने की सम्पूर्ण नियम/निर्देश भेजने की कृपा करें। बड़ी कृपा होगी.

**निगम प्रकाश कश्यम**
अध्यक्ष, विश्व बहुजन समाज रेडियो श्रोता संघ
ग्राम–मिश्रपुर, पोस्ट–खैरा
वाया जिगना आर.एस.,
जिला–मिर्जापुर,, उ0प्र0 231331

# विकास एवं विज्ञान पुरुष-डॉ.जोशी

इलाहाबाद में विकास की गंगा बहलाने वाले डॉ. जोशी जिन्होनें यमुना पुल का रिकार्ड समय में कार्य करवाने से लेकर चौफटका पूल का कार्य पूरा करवाना, रेलवे जोन की स्थापना, साइंन्स सिटी का शिलान्यास, राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर पुर्वोतर भारत तक सूचना प्रोद्योगिकी संस्थान, अंतरिक्ष प्रशिक्षण संस्थान, बायो संस्थान खुलवाने वाले डॉ. जोशी को विकास पुरूष के साथ विज्ञान पुरुष भी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी.

**गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी**

इलाहाबाद ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के नेता दिए हैं. इलाहाबाद ने कई प्रधानमंत्री भी दिये हैं. लेकिन इलाहाबाद का विकास जितना होना चाहिए नहीं हो सका. इलाहाबाद नेताओं के मामले में तो आगे रहा है लेकिन विकास के मामले में पीछ. इलाहाबाद में सर्वप्रथम विकास की गंगा बहाई स्व0 पं0 हेमवती नन्दन बहुगुणा ने. उनके बाद इलाहाबाद का विकास रुक सा गया था. यहॉ नैनी स्थित औद्योगिक नगरी के उद्योग एक–एक कर बंद होने लगे, ऐसे में विकास पुरूष के रुप में अवतरित इलाहाबाद के क्षेत्रीय सांसद, केन्द्रीय मानव संसाधन एवं समुद्र विकास मंत्री, भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अन्तराष्ट्रीय छवि रखने वाले व्यक्तित्व व कृतित्व के धनी, महान वैज्ञानिक, प्रखर वक्ता व जननेता डॉ0 मुरली मनोहर जोशी हुए. 1996 से लोकसभा में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे डॉ0 जोशी 1998 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में बनी केन्द्रीय राजग सरकार में मंत्री बने. उन्हें मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा महासागर विकास मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों की जिम्मेदारी उनके कंधे पर आयी. तीनों मंत्रालय देश के विकास में, देश का भविष्य तय करने में अति–महत्वपूर्ण माने जाते हैं.

दुर्गमतम इलाकों के गॉवों–टोलों में प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध करने से लेकर उच्चतम शिक्षा और अनुसंधान की नीतियों व योजनाओं को निर्धारित, निर्देशित, संचालित और क्रियान्वित करने के लिए डॉ. जोशी को काफी समय

और श्रम लगाना पड़ता है. इन सारी व्यस्तताओं के बीच भी एक चीज उनकी दृष्टि से कभी ओझल नहीं होने पाती. यह चीज है इलाहाबाद का सर्वागीण विकास. डॉ. जोशी अन्य राजनीतिज्ञों की तरह वायदे नहीं करते बल्कि कार्य करने में विश्वास करते है. डॉ. जोशी के अथक प्रयास से यमुना और टोंस नदी, पालपट्टी गहरानाला तथा झगड़ा बैरिया पर पुल खड़े हो गए हैं, दुर्गम माने जाने वाले गांवो तक सड़के बनी है. डॉ0 जोशी का सपना इलाहाबाद को विद्या के केन्द्र के रुप में स्थापित करने का है जहॉ लोग ज्ञान की सीमाओं को छू सकें. इस सोच को साकार करते हुए उन्होंने इलाहाबाद में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान ;के एस कृष्णन भू चुम्बकीय संस्थान, मानद विश्वविद्यालय में उन्नत मोतीलाल नेहरु नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी, साइन्स सिटी परिसर आदि इलाहाबाद को प्रदान किए. उनके प्रोत्साहन से इलाहाबाद विश्वविद्यालय में इंस्टीट्यूट ऑफ इंटर–डिसिप्लिनरी स्टडीज जिसके अन्तर्गत के.बनर्जी वायुमंडलीय एवं महासागर विकास केन्द्र, एम.एन. साहा अंतरिक्ष अध यन केन्द्र, बायोटेक्नालाजी सेन्टर आदि ने काम शुरु कर दिये हैं. इसी प्रकार व्यवसायिक अध्ययन संस्थान (इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज) स्थापित हुआ है जिसके अंतर्गत खाद्य प्रोद्योगिकी केन्द्र (सेन्टर फार फूड टेक्नालाजी) और कम्प्यूटर शिक्षा केन्द्र फल फूल रहे हैं तथा फैंशन डिजाइनिंग जैसे व्यवसाय केन्द्रित पाठ्यक्रम आरंभ हुए है जो स्वतंत्र केन्द्र के रुप में उभर आने की संभावना है. सेन्टर ऑफ बिहैवियरल एंड काग्निटिव साइन्स तथा नेशनल इंस्टीट्यूट आफ एक्सपेरिमेन्टल मिनेराजाली एंड पेट्रोलाजी की स्थापना इलाहाबाद विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने के प्रयासों का प्रमाण है.

1952 में 18 वर्ष की उम्र में पढ़ाई के उद्देश्य से इलाहाबाद आए डॉ0 जोशी इलाहाबाद के ही होकर रह गये. ऐसा बहुत से लोग करते है और शिक्षा ग्रहण कर या तो कोई पद पाकर चले जाते हैं अथवा अपने घर वापस लौट जाते हैं, लेकिन डॉ जोशी के अंदर समाज व देश सेवा की ललक थी. वह जहां भी रहे, इलाहाबाद का बनके रहे.

उन दिनों इलाहाबाद धार्मिक, सार्वजनिक, शैक्षणिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था. संत प्रभुदत्त ब्रहमचारी जैसी आध्यात्मिक विभूति इलाहाबाद को अलोकित किए हुए थे. पं. जवाहर लाल नहेरु, लाल बहादुर शास्त्री और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन सार्वजनिक जीवन में इलाहाबाद का प्रतिनिधित्व करते थे. पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुश्री महादेवी वर्मा ने साहित्यिक क्षेत्र में इलाहाबाद को ख्याति दिला रखी थी. इलाहाबाद विश्वविद्यालय की तूती देश भर में बोलती थी. अनेक नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक यहां आते थे. प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय में अध्यापन के साथ–साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम में जीवन खपा कर

इलाहाबाद के लोगों के लिए डॉ. जोशी का अनमोल तोहफा
अपने आप में अनोखा निर्माणाधीन यमुना पुल

सार्वजनिक जीवन को एक नया आयाम दे रहे थे तो डाक्टर राममनोहर लोहिया और आचार्य नरेन्द्र देव जैसे समाजवादी आंदोलन के शिखर–पुरुष महीने दो महीने पर इलाहाबाद में आकर विचारध ाारा की एक अलग ही दुनिया की झलक दिखा जाते थे.

इन सबसे प्रखर बुद्धि और संवेदनशील हृदय से संपन्न डॉ0 मुरली मनोहर जोशी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके. यहां वे विभिन्न विचारों के संतो, राजनेताओं, बुद्धिजीवियों व साहित्यकारों से मिलने का अवसर प्राप्त किए. पं. सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा से उनके निकट संबंध बने, जिनसे उन्होंने मानवीय सरोकारों की गहराई तक देखना सीखा. इलाहाबाद से उन्हें सीख मिली कि इलाहबाद केवल डिग्री हासिल कर लेने के लिए नही है, बल्कि जीवन का एक पर्याय बताने का स्थान है.

विकास के लिए डॉ0 जोशी ने केवल इलाहाबाद के अपने संसदीय क्षेत्र को ही नहीं चुना बल्कि आस पास के क्षेत्रो को भी इससे अछूता नहीं छोड़ा. इसका प्रमाण अपने निकटतम संसदीय क्षेत्र चायल के अर्न्तगत आने वाले पीपल गांव के पास स्थित देवघाट, झलवा में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान का परिसर. इसी प्रकार के.एस. कृष्णन भू–चुम्बकत्व संस्थान फुलपुर संसदीय क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले झूसी में स्थापित करवाया. उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदान जिससे आम जन का सीधे लगाव था वह था यमुना पुल का निर्माण करवाना.

# डॉ. जोशी बाहर जितने कठोर है, अंदर से उतने ही कोमल है

श्रीनाथ द्विवेदी,
संयोजक, इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र

**डॉ०** जोशी के सम्पर्क में जब आया तो मुझे ऐसा लगा कि वे ऐसे चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी है कि जो भी उनके सम्पर्क में आता है वह उनका होकर रह जाता है. उसे उनका साथ छोड़ने का साहस ही नहीं कर पाता. एक बार मेरे मन में यह बात आयी कि मैं पार्टी का काम नहीं करूंगा. उन्होंने मुझे बुलाया और मेरे सर पर हाथ फेरते हुए इस प्रकार समझाया कि मैं दुबारा ऐसा साहस नहीं कर सका. मैं उनकी बातों व व्यक्तित्व से इस कदर प्रभावित हुआ कि मैंने उसी दिन संकल्प लिया कि समाज व देश हित में मैं डॉ. जोशी के साथ रहकर काम करूंगा. उनके मार्गदर्शन में काम करते-करते जो ज्ञान व कर्मठता प्राप्त हुई उसको मैं भुला नहीं सकता. कई बार वे मेरे साथ साईकिल से व पैदल चलकर संगठन को मजबूत करने का कार्य किए. मेरे व्यक्तित्व पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा. इससे मेरे अंदर की झिझक समाप्त हो गयी और एक समाज सेवी छवि मुखरित होने लगी. जिसका श्रेय डॉ. जोशी को जाता है. किसी भी कार्यकर्ता को आगे बढ़ाने के लिए पीछे से शक्ति प्रदान करने का जो उनका दृष्टिकोण है उससे कार्यकर्ता को आगे बढ़ने का उत्साह मिलता है. उनके अन्दर गजब की ऊर्जा है. उनकी सकारात्मक सोच कार्यकर्ताओं के प्रति हमेशा रहती हैं.उनकी इसी कार्यशैली के कारण केवल इलाहाबाद में ही नहीं बल्कि पूरे देश में सैकड़ो कार्यकर्ता लगे रहते है.

बाहर से कठोर दिखने वाले डॉ. जोशी आन्तरिका रुप से कोमल हृदय के स्वामी है. कभी-२ कार्यकर्ता इस बात को नहीं समझ पाते हैं. कार्यकर्ता कभी-२ वे गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं. निष्ठावान, त्यागी व समर्पित भाव से काम करने वाले कार्यकर्ताओं की पहचान उनके अन्दर बहुत ही उच्च कोटि की है. आज जो भी कार्यकर्ता उनके पास आता है वह यह महसूस करता है कि डॉ० जोशी सबसे अधिक उन्हीं को मानते हैं. कार्यकर्ताओं की क्षमता देखकर योग्यता के अनुरुप उनसे काम लेना उनकी विशेषता है. वह प्रत्येक कार्यकर्ता से बहुत ही अधिक प्यार करते हैं. यह उनकी विशेष्ज्ञ योग्यता है. डॉ० जोशी अनुशासन को विशेष महत्व देते हैं. अनुशासन में नहीं रहने वालों के लिए वे बहुत कठोर हृदय भी है.

इस पुल का निर्माण होने से न केवल इलाहाबाद की जनता लाभान्वित होगी बल्कि आस पास के जिलों के निवासी भी लाभान्वित होंगे.

डॉ0 जोशी की राष्ट्रीय छवि यह साबित करती है कि वह इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र के ही नहीं बल्कि देश के एक अग्रणी नेता है और पूरे देश का विकास करना उन्होंने अपना कर्तव्य माना. जिसके फलस्वरुप ग्वालियर, जबलपुर, मध्य प्रदेश तथा कांचीपुरम में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना के उनके निर्णयों में इसकी झलक मिलती है. उत्तर–पूर्वी राज्यों के विकास व विद्यार्थियों को लाभ पहुचांने के लिए गुवाहटी–असम, में भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान–इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नालाजी को तेजी से पूरा कराना उनकी इसी सार्वदेशिक सोच का परिणाम है. रुड़की विश्वविद्यालय को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान का दर्जा देना, नोएडा में राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान की स्थापना, दिल्ली में उच्च स्तरीय प्लांट जीनोम रिसर्च सेन्टर, गुड़गांव में राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल–मणिपुर में इस्टीट्यूट आफ बायोरिसोर्सेस एंड संस्टेनेबुल डेवलवमेंन्ट, भुवनेश्वर में इंस्टीट्यूट आफ लाइफ साइंसेस, हैनले–लद्दाख में विश्व के सर्वोच्च ज्योतिर्विज्ञान केन्द्र और दूरबीन की स्थापना उनकी सार्वदेशिक दृष्टि के उदाहरण है.

डॉ0 जोशी की पहल पर पूर्वोत्तर राज्यों के लिए 387 करोड़ रुपये के प्रस्ताव केन्द्रीय पूल से निधियन के लिए स्वीकृत किए गए ताकि सिक्किम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में शिक्षा क्षेत्र में पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जा सकें. जम्मू कश्मीर में शिक्षा के समग्र विकास और वहॉ के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से परिचित और सम्मिलित करने के लिए विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं. डॉ. जोशी ने एक ओर जहां संस्कृत भाषा के विकास और अध्ययन के लिए स्वतंत्र भारत के इतिहास में अब तक सर्वाधिक सुविधांए और धन उपलब्ध कराया है, वहीं शैक्षणिक रुप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए गहन

# डॉ० जोशी स्वदेशी के प्रबल समर्थक है: लक्ष्मी शंकर ओझा

१९७४ में मीसा के अन्दर जेल गये लक्ष्मी शंकर ओझा का कहना है कि डॉ० मुरली मनोहर जोशी मेरे राजनीतिक गुरू है. १९७३ में इलाहाबाद डिग्री कॉलेज के छात्र संघ के उपाध्यक्ष रहे तथा १९७४-७५ में अध्यक्ष रहे श्री ओझा १९७७ में इमरजेन्सी में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यक्रम के दौरान जेल गये. डॉ. जोशी के जैसे वे भी आर.एस.एस के सदस्य थे. उनका कहना है कि डॉ. जोशी हम लोगों की बहुत चिन्ता किया करते थे. जब मैं बी.ए. द्वितीय वर्ष का छात्र था और परीक्षा के दौरान मुझे जेल हो गयी तो डॉ. जोशी ने कोर्ट कार्यवाही का जिम्मा लिया और मैंने जेल में ही परीक्षा दी. वे मेरे लिए एक गार्जियन जैसे थे. मेरे सघर्ष में वे सदैव मेरे साथ रहे हैं. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, ईमानदार व पुरानी परम्परा के व्यक्ति है डॉ. जोशी. वे सदैव सामान्य जन के व्यक्ति के सर्व सुलभ व्यक्ति रहे हैं. पं. दीनदयाल उपाध्याय के निकटस्थ सहयोगी रहे डॉ. जोशी राष्ट्रवादी दोष, स्वदेशी धारणाओं को योजनाबद्ध तरीके से पूरा करते हैं. वे पारस पत्थर के समान है.

**एक लोहा पूजा में राखत, इक घर वधिक वरोख**
**यह दुविधा पारस नहीं मानत, कंचन करत खरोह**

के समान डॉ. जोशी है. डॉ. जोशी ने सारे विभागों को स्वदेशीकरण करने का पूर्ण प्रयास किया, वे प्रबंधन संस्थान की फीस कम करवाये. जो कार्य कई प्रधानमंत्रियों ने नहीं किया वह कार्य डॉ. जोशी ने कर दिखाया. उनके अंदर राजनीतिक विद्वेष की भावना नाममात्र की भी नहीं है. अलमोड़ा के मूल निवासी एक जमीदार परिवार से तालुकात रखते हैं. डॉ. जोशी के पिता चीफ इंजीनियर थे. वे अलमोड़ा से यहॉ आकर लोकसेवक चुने गये. वे भाजपा के कोषाध्यक्ष, महामंत्री त था अध्यक्ष भी रहे. डॉ. जोशी के अंदर हिन्दी प्रेम अटूट रुप से भरा हुआ है. वे विश्वविद्यालय में साइंस जैसे विषय को हिन्दी में पढ़ाते थे. वे स्वदेशी के प्रबल समर्थक है. जिसकी अमिट छाप उनके अंदर दिखती है. वे कभी पैंट शर्ट नहीं पहनते हैं.

# डॉ. जोशी द्वारा इलाहाबाद में कराये गये प्रमुख विकास कार्य

☞इलाहाबाद में यमुना पुल का निर्माण
☞भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानकी स्थापना
☞झूंसी में भू–चुम्बकत्व शोध संस्थान की स्थापना
☞इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्पेस सेन्टर तथा बौद्धिक सम्पदा कानूनों के अध्ययन हेतु चेयर की स्थापना
☞बॉयोटेक्नोलॉजी सेन्टर की स्थापना
☞साइन्स सिटी का शिलान्यास
☞नैनी में इण्डियन ऑयल फिलिंग प्लाण्ट की स्थापना
☞दारागंज में स्लूज गेज का निर्माण
☞रेलवे के नए जोन उत्तर मध्य रेलवे की स्थापना
☞सूबेदारगंज में चौफटका उपरिगामी सेतु का उद्घाटन
☞नॉन कन्वेशनल इनर्जी एजूकेशनल पार्क की स्थापना
☞यमुनापार में पालपटटी एवं खेरिया के मध्य पीपे के पुल का निर्माण
☞सलोरी नाले पर पुलिया का निर्माण
☞राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना
☞ग्राम–रेरा, जसरा में अत्याधुनिक सुविधाओं एवं नई टेक्नालॉजी तथा विज्ञान के नए विषयों के साथ आदर्श जवाहर नवोदय विद्यालय की स्थापना
☞एम.एल.एन, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी तथा एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूट को डीम्ड युनिवर्सिटी का दर्जा
☞हल्दिया बंदरगाह से इलाहाबाद तक जल यातायात की शुरूआत, अंतर्देशीय जल परिवहन टर्मिनल की स्थापना हेतु प्रयासरत
☞मेजा में गर्ल्स पॉलीटैक्निक की स्थापना स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में सरस्वती घाट में शहीद स्मारक का निर्माण, अमर निशानी 'नीम का पेड़' तथा चन्द्रशेखर आजाद पार्क का सौन्दर्यीकरण
☞पवित्र स्थल मनकामेश्वर मंदिर–लालपुर, भारद्वाज आश्रम, बैलोकेश्वर महादेव, शिवकुटी, पड़िला महादेव तथा श्रृंगवेरपुर, खुसरोबाग, मैकफर्सन लेक का पर्यटन केन्द्र के रुप में विकास व सौन्दर्यीकरण
☞बाण सागर परियोजना का विस्तार
☞जार्ज टाउन में तरण–ताल का निर्माण
☞जल–क्रीड़ा काम्प्लैक्स की स्थापना
☞नैनी में शिक्षण सदन का निर्माण
☞मदरसा जामियातुल हसन, चकिया,
☞किदवई मेमोरियल गर्ल्स इं.का., हिम्मतगंज, यादगार–ए–हुसैन इं. कालेज नखास कोना, रियाज इं. कॉलेज, ओखलाखास करारी, मदरसा अरबिया इस्लामिया बैसातुल उलूम, बक्शी बाजार, इलाहाबाद में उर्दू कम्प्यूटर शिक्षण की स्थापना
☞खालसा मेमोरियल चिकित्सालय की स्थापना
☞अल्लापुर मलिन बस्ती का आदर्श बस्ती के रुप में विकास
☞माता अमृतानंदमयी मठ के सहयोग से कोरांव में निर्धनों के लिए ५० नि:शुल्क आवासों का निर्माण कार्य प्रारम्भ
☞औद्योगिक क्षेत्र नैनी में स्थित महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों एचसीएल, टीएसएल, बीपीसीएल व आईटीआई के पुनरुद्धार तथा उन्हें निजीकरण से बचाए रखने में विशेष सहयोग
☞इलाहाबाद में भारतीय खेल प्राधिकरण सेन्टर की स्थापना
☞इलाहाबाद में जिमनास्टिक्स के प्रतिक्षण व विकास के लिए आर्थिक सहयोग

**स्रोत:**इलाहाबाद के डॉ0 जोशी और विकास का महायज्ञ नामक संग्रह से. भाजपा कार्यालय इलाहाबाद द्वारा जारी

कार्यक्रम, मदरसा शिक्षा के आधुनिकीकरण के लिए वित्तीय सहायता का प्रबंध किया है, अल्पसंख्यक संस्थाओं में सूचना प्रौद्योगिकी शुरु की गई है.

डॉ0 जोशी के मार्गदर्शन में समेकित बाल विकास योजना के अन्तर्गत छह वर्ष से कम आयु के सवा तीन करोड़ बच्चे और 66 लाख महिलाएँ पूरक पोषाहार, स्वास्थ्य परीक्षा, स्कूल–पूर्व शिक्षा जैसी सुविधाओं से लाभान्वित हो रहे हैं. किशोर लड़कियों को सामर्थ्यवान बनाने के लिए किशोरी शक्ति योजना दो हजार प्रखंडो में आरंभ हुई हैं. उनकी पहल का ही परिणाम है कि पूर्णतः स्वदेशी 14 सीटों वाला सारस विमान दिखाई पड़ रहे है. **o**

# एक नज़र डॉ0 मुरली मनोहर जोशी एक व्यक्तित्व

✍सतीश शुक्ला

पतित पावनी माँ यमुना की गोद दिल्ली में 5 जनवरी 1934 को जन्में और गंगा–यमुना सरस्वती की गोद में पले–बढ़े डॉ0 जोशी मूलतः हिमालय की वादी अल्मोड़ा के मूल निवासी हैं.

प्रयाग विश्वविद्यालय में भौतिकी विज्ञान के अध्यक्ष रहे डॉ0 जोशी की प्रारम्भिक शिक्षा ननिहाल चांदपुर, जिला बिजनौर में हुई और अल्मोड़ा से इण्टरमीडिएट करने के बाद मेरठ से स्नातक की डिग्री हासिल की तथा एम.एस.सी में दाखिले के लिए वह प्रयाग की भूमि पर आयें और यहीं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक बनकर मातृभूमि की सेवा में डट गये. परास्नातक की उपाधि हासिल करने के बाद डॉ0 जोशी ने भौतिकी विषय में 'स्पेक्ट्रोस्कोपी' शाखा में डी0फिल् की उपाधि हासिल की और सन् 1957 में 23 वर्ष की उम्र में प्रयाग विश्वविद्यालय में ही शिक्षण कार्य शुरु किया. सन् 1952 में डॉ0 जोशी ने विद्यार्थी परिषद् के माध्यम से सार्वजनिक जीवन की शुरूआत कर राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रचार प्रसार करने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी. वीर सावरकर, माधव सदाशिव गोलवरकर, डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पी0डी0टण्डन, पं0 दीनदयाल उपाध्याय, नाना जी देशमुख जैसे चिन्तक और विचारकों के सानिध्य में देश सेवा का व्रत लेकर बिना बाधा के जनसेवा में डॉ0 जोशी तल्लीन हैं. उन्होंने 1953–54 में प्रयाग के महाकुम्भ में गो–रक्षा में सक्रिय योगदान दिया. दर्जनों देशों की यात्रायें कर भारत की यात्रायें कर भारत की संस्कृति और विचारधारा का प्रचार प्रसार करने में वह पूरी शक्ति से जुटे हैं. डॉ0 जोशी विज्ञान के विद्यार्थी रहे जिसमें अंग्रेजी की अधिकता होती है, लेकिन उन्होंने पहले अध्येता के रुप में अपना भौतिकी जैसे कठिन विषय का शोध कार्य हिन्दी में पूरा किया. उन्होंने आधुनिक विज्ञान का अध्ययन–मनन प्राचीन भारतीय वाग्मय के आधार पर किया.

डॉ. जोशी का व्यक्तित्व बहुआयामी है, जब पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ के युवा मंच के संयोजन का भार उनको सौंपा तो उन्होंने बड़ी कर्मठता से अपने नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन किया. विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ0 जोशी ने इलाहाबाद में प्रारम्भ हुए हिन्दी आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और 1966 में विश्व हिन्दू परिषद के प्रथम अधिवेशन की तैयारी समिति में उन्हें मंत्री पद दिया गया. सन् 1972–73 में गुजरात और बिहार में छात्र आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और 1974 में उत्तर प्रदेश में इसकी आहट हुई तो उस समय लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समीप डॉ0 जोशी आए. डॉ0 लेहिया के विचारों से तादात्म्य न होते हुए भी उनका रिश्ता मजबूत था. सन् 1962 में जब फूलपुर से पं0 जवाहर लाल नेहरु के खिलाफ डॉ0 लोहिया को चुनाव मैदान में उतारा गया तो

उसके पीछे समाजसेवी नाना देशमुख, प्रभुदत्त ब्रहमचारी, पं0 दीनदयाल उपाध्याय और डॉ0 जोशी का हाथ था. सन् 1975–76 का काल डॉ0 जोशी के जीवन का सर्वाधिक संकटग्रस्त समय था. देश में आपातस्थिति लागू कर तत्कालीन इंदिरा सरकार ने डॉ0 जोशी को इलाहाबाद में उनके घर से 26 जून को गिरफ्तार करा लिया जिसके खिलाफ जेल में रहते हुए उन्होंने कानूनी लड़ाई लड़ी और न्यायालय ने गिरफ्तारी को अवैध घोषित किया. उसी दौर में लोकसभा चुनाव हुआ, जिसमें अपनी गृह नगरी अल्मोड़ा से डॉ0 जोशी चुनाव मैदान में कूदे और जनता ने भारी बहुमत से विजयी बनाया. उसी समय नवगठित जनता पार्टी का उन्हें राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया और जब दोहरी सदस्यता को लेकर जनता पार्टी से अलगाव हुआ तो डॉ0 जोशी ने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में अहम भूमिका निभाई और अटल बिहारी बाजपेयी को अध्यक्ष एवं डॉ0 जोशी को राष्ट्रीय महासचिव का दायित्व सौंपा गया. 1 फरवरी 1991 को भारतीय जनता पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 जोशी को निर्वाचित किया गया और 1993 तक इस प्रतिष्ठित पद पर रहते हुए कन्याकुमारी से कश्मीर तक एकता यात्रा के वाहक बने और 26 जनवरी 1992 को भारत का स्वर्ग कहीं जाने वाली कश्मीर की घाटी श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहरा कर देश का सम्मान बढ़ाया. डॉ0 जोशी 1992 में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए और देश के उच्च सदन में अपनी प्रखर वाणी से सबको चकित किया.

अयोध्या में 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी ढांचा ध्वस्त हुआ तो उसके आरोप में डॉ0 जोशी को 8 दिसम्बर को गिरफ्तार करके पिपरी में नज़रबन्द किया गया. राजनैतिक झंझवातों और तमाम व्यस्तताओं के बाद भी डॉ0 जोशी का सतत लेखन जारी है. यही कारण है कि अब तक सैकड़ो लेख देश–विदेश की पत्र–पत्रिकाओं और जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं.

उन्होंने 1977 में फ्रैंकफर्ट में अन्तर्राष्ट्रीय पार्लियामेन्ट्री यूनियन में भाग लिया, सन् 1991 में जर्मनी में आयोजित यूरोपीय हिन्दू सम्मेलन में और स्वाकी विवेकानन्द द्वारा सम्बोधित विश्वधर्म सम्मेलन के शताब्दी समारोह में भी उन्होंने अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया, 1996 में लोकसभा के चुनाव में डॉ0 जोशी अपनी कर्मभूमि प्रयाग से लोकसभा सदस्य चुने गये और केन्द्र सरकार में गृह मंत्री का पद संभाला. सरकार के कुछ ही दिनों में गिर जाने के कारण दोबारा चुनाव हुआ और फिर उन्हें नेतृत्व करने का मौका मिला. 1998 में तीसरी बार डॉ0 जोशी ने इलाहाबाद से चुनाव जीतकर हैट्रिक लगाई और भारत सरकार के मानव संसाधन विकास, विज्ञान और प्रोद्योगिकी तथा महासागर विकास मंत्री का दायित्व संभालते हुए देश में अपनी नेत्त्व क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया. डॉ0 जोशी ने शिक्षा के क्षेत्र में अमूल चूल सुधार कर इतिहास को बदलकर राष्ट्र गौरव बढ़ाया, जिसपसर सर्वोच्च ने भी अपनी सहमति की मुहर लगाई.

लड़कियों की शिक्षा निःशुल्क करने, शिक्षा को मैालिक अधिकार बनाने, शिक्षा का भारतीयकरण करने का गौरव डॉ0 जोशी को प्राप्त है. विज्ञान और तकनीकि के क्षेत्र में देश का चतुर्दिक विकास, सांस्कृतिक धरोहरों को सर्वसुलभ बनाने और विज्ञान एवं धर्म को नई दिश देने, पोखरण परमाणु परीक्षण में डॉ0 जोशी की भूमिका सराहनीय रही. उनकी वैज्ञानिक दृष्टि के कारण ही भारत वर्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में अपनी पताका फहरा रहा है. स्वदेशी को मूलमंत्र मानते हुए भारत की प्राचीन धरोहरों के जरिये देश का सम्मान और आत्मनिर्भरता दिलाने का वीणा डॉ0 जोशी ने उठाया है. कथनी करनी में एकरुपता के प्रतीक डॉ0 जोशी ने राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान के लिए सदैव प्रयत्न किया, यही कारण है कि डॉ0 जोशी को प्रयाग सहित समूचे देश की जनता का व्यापक समर्थन मिल रहा है.

# विज्ञान के प्रति समर्पित डॉ0 जोशी

डॉ0 शिवगोपाल मिश्र,
प्रधानमंत्री,
विज्ञान परिषद, इलाहाबाद

**डॉ0** मुरली मनोहर जोशी में विज्ञान, धर्म एवं राजनीति की अद्भूत त्रिवेणी देखने को मिलती है. मैंने डॉ0 जोशी को उनके शोध छात्र के रुप में विश्वविद्यालय में कार्य करने से लेकर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं महासागर विकास मंत्री के रुप में क्रमशः ऊंचाई को छूते देखा है. किन्तु मुझे उनका वैज्ञानिक रुप सर्वाधिक आकर्षक लगा है. उनकी वेशभूषा नितान्त भारतीय और उनके पारिवारिक संस्कारों की सूचक रही है. ऐसा नहीं है कि उनमें जो राष्ट्रीय भावना है वह उनकी राजनीतिक उपलब्धि हो. वे प्रारम्भ से ही आदर्श राष्ट्रवादी रहे हैं जिसे लोग हिन्दुत्व की संज्ञा देकर अपने अज्ञान का परिचय देते हैं. यह भारतीयता स्वतन्त्रतापूर्व की देश की व्यापी राष्ट्रीयता ही है किन्तु लोग स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उसे भूल गये हैं. विद्या की देवी सरस्वती की वन्दना, या हमारे अपूर्व ज्ञान के भण्डार वेदों में निहित विज्ञान का उल्लेख या अपने पूर्व के उत्कट ज्योतिष ज्ञान का पुनः शंखनाद भले ही डॉ0 जोशी के विरोधियों को उल्टी गंगा बहाने जैसी लगे किन्तु अपनी प्राचीन परम्परा को विस्मृत करके कोई भी राष्ट्र सीना तान कर नहीं चल सकता.

विज्ञान परिषद प्रयाग देश की अति महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संस्था है जिसका उद्देश्य हिन्दी के माध्यम से विज्ञान का प्रचार–प्रसार रहा है. डॉ0 जोशी ने इस सस्था को अपने विद्यार्थी जीवन से ही निकट से देखा है. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती–डॉ0 सत्यप्रकाश से उनका परिचय था. अतः 1958 में जब विज्ञान परिषदा प्रयाग से एक त्रैमासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तो जोशी जी ने अपना भौतिकी विषयक शोध पत्र इस पत्रिका में प्रकाशनार्थ स्वामी सत्यप्रकाश जी को दिया. यह डॉ0 जोशी का हिन्दी प्रेम हम सबको अच्छा लगा था और तभी से वे विज्ञान परिषद की गतिविधियों से लगातार जुड़े रहे. यह कोई आश्चर्य की बात नही है कि जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग डॉ0 जोशी के अधीन आया तो उन्होंने विज्ञान परिषद अनुसन्धान पत्रिका की ग्रांट बढ़ाकर यह सिद्ध कर दिया कि उनमें हिन्दी के प्रति कितना अनुराग है और वे इस शोध पत्रिका को भूले नहीं. इधर दो–तीन वर्षो में उनके सहयोगियों ने भी अपने शोध पत्र इसी पत्रिका में प्रकाशित करके अपने पूर्व–अनुराग का परिचय दिया है.

डॉ0 जोशी ने विज्ञान–परिषद प्रयाग से 1915 से ही प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'विज्ञान' के कलेवर को आधुनिक बनाने, उसकी पृष्ठ संख्या बढ़ाने के लिए सी.एस.आई.आर., नई दिल्ली से मिलने वाली आर्थिक सहायता में वृद्धि की और उसे चार रंगो में प्रकाशित करने के लिए इस सहायता में आगे भी बृद्धि का अश्वासन भी दे रखा है. उनका अभिमत है कि हिन्दी को गैारव तभी बढ़ सकता है जब विज्ञान विषयक साहित्य का तेजी से और रुचिकर ढंग से प्रकाशन हो.

विज्ञान परिषद प्रयाग पर वे सदा से उदार रहे हैं. उन्होंने अपनी सांसद निधि से 'विज्ञान निकुंज' नाम से एक सुन्दर कक्ष निर्मित कराया है. वे परिषद के सभागार में आये हैं और समय–समय पर अपने निवास पर भी विज्ञान परिषद के अन्तरंगियों से मिलकर परिषद के उन्नयन हेतु नाना प्रकार के सुझाव देते रहे हैं.

विज्ञान परिषद प्रयाग ने जब उनके समक्ष विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी

विश्वकोश के निर्माण की एक योजना प्रस्तुत की तो उन्होंने उसका समर्थन करते हुए सभी प्रकार से सहायता करने का आश्वासन दिया है.

दो वर्ष पूर्व विज्ञान परिषद ने जब डॉ0 जोशी के पाण्डित्यपूर्ण वैज्ञानिक व्याख्यानों को संकलित एवं अनूदित करके मेरे सपनों का वैज्ञानिक भारत नाम से प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा तो वे पहले ना–ना करते रहे किन्तु अंत में इस शर्त पर तैयार हो गये कि अनूदित व्याख्यानों को वे पढ़ने के बाद ही प्रकाशनार्थ स्वीकृति देंगे. उन्होंने इन व्याख्यानों का हिन्दी संस्करण पढ़ लिया है और हमें आशा है कि यह पुस्तक शीघ्र ही प्रकाश में आ जावेगी. पाठक देखेंगे कि यह मौलिक शास्त्र का प्रोफेसर सचमुच ही कितनी गम्भीरता से विषय वस्तु को प्रस्तुत करता है.

यदि देश–विदेश से प्राप्त उपाधियों पर दृष्टिपात किया जाय तो पता चलेगा कि चाहे रुसी अकादमी से मिला सम्मान हो, या विज्ञान परिषद प्रयाग से मिली मानद फेलोशिप, वे एक स्वर से यही बताने वाले हैं कि उनकी योग्यता का सम्मान हुआ है. उनके साथ ही उनकी भारतीयता का सम्मान हुआ है.

डॉ0 जोशी अपनी शिक्षा पीठ इलाहाबाद विश्वविद्यालय को भूले नहीं है. वे इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहे हैं. उन्होंने इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जैव प्रौद्योगिकी, महासागर अनुसन्धान जैसे नवीन विभागों के खोले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है और इलाहाबाद के लिए उनका सबसे बड़ा तोहफा रहा है भारतीय सूचना प्रौद्योगिगी संस्थान की स्थापना. यही नहीं, देश की प्राचीनतम सांइस एकेडमी, नेशनल एकेडमी को राष्ट्रीय स्तर प्रदान करने में डॉ0 जोशी का अप्रतिम योगदान रहा है.

भारत की शिक्षा पद्धति को अमूल–चूल संस्कारित करने में डॉ0 जोशी की भारतीयता ही काम कर रही है. हम तो यही चाहेंगे कि डॉ0 जोशी बारम्बार देश की शिक्षा की बागडोर संभालते रहे. अभी उनमें युवकों जैसे उत्साह है और देश को गन्तव्य तक पहुँचाने के लिए असीम ललक.


दाऊजी का है कहना हर अनाथ और बृद्ध है मेरा अपना

स्नेहालय

(अनाथाश्रम एवं बृद्धाश्रम)

सूचना और सहयोग आपका, परवरिश हमारी

ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ0प्र0 में

निर्माणाधीन अनाथ एवं बृद्धा आश्रम में सहयोग करें

सहयोग के लिए हमें निम्न पते पर सम्पर्क करें या भेजें:

**पंजीकृत कार्यालयः**
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद 0532–3155949

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, झलवा,
इलाहाबाद

नोटः कृपया चेक / ड्राफ्ट जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से ही काटे,
सहयोग राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें

सचिव / प्रबंधक
"दाउजी"
जी.पी.एफ.सोसायटी
**स्नेहालय** (अनाथ एवं बृद्धाआश्रम)

**निवेदकः संतोष दूबे** (उप प्रधान),
सत्यानन्द दूबे, पुष्पेन्द्र दुबे
ग्रामः टीकर, पोस्टः टीकर जिलाः देवरिया

# एक व्यक्तित्वः डॉ0 अशोक गुलशन

**नामः डॉ0 अशोक 'गुलशन'**

**पिताः** स्व0 बृज बहादुर पाण्डेय 'भल्लू'
**जन्मः** 25 जून 1963, पिपराघाट, बलरामपुर, उ.प्र.
**शिक्षाः** बी.ए.एम.एस.(लखनऊ वि0), एन.डी., डी.एच. एम. (कलकत्ता), आचार्य (द्वय), विद्यावाचस्पति (द्वय)–मानद
**प्रकाशनः** इंग्लैण्ड, अमेरिका, नेपाल व भारत के 18 प्रान्तों के 509 पत्र–पत्रिकाओं, संकलनों व निर्देशिकाओं में हिन्दी, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशन व लगभग दो दर्जन संकलनों में प्रकाशन–स्वीकृति
**निजी कृतियॉ–** गुलशन नामा (गजल, मुक्तक, शेर संग्रह), मीन वृक्ष (ग़ज़ल–मुक्तक संग्रह), अर्द्धशतक (कविता संग्रह), मेहनत का फल कहानी।
**सम्पादनः** समर्पण, श्रृंखला, काव्यगंन्धा, विहार (काव्य संकलन)
**रिलीज ऑडियों कैसेट्स–** चढ़ली जवानियॉ, ड्राइवर अनाड़ी.....,ओ! मेरी जानम, मेरा दिल माने न, पिया नहीं आये एवं लागे न जियरा में गीत संकलित।
**सम्मान/पुरस्कार एवं उपाधियां–** देश–विदेश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा 132 सम्मान/पुरस्कार एवं उपाधियां
**संस्था पदाधिकारी–** लगभग 4 दर्जन साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं कलात्मक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे हैं।
**लेखन–विद्या–** साहित्य की सभी विद्याओं में सतत लेखन व प्रकाशन।
**सम्प्रति–** प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, नासिरगंज, श्रावस्ती, उ.प्र.
**सम्पर्क–**आख्या क्लीनिक, 630ए, कानूनगोपुरा उत्तरी, जिला चिकित्सालय केसामने,बहराइच, उ.प्र. 05252-36284(आ.)

## गीत

नेहाशीष मुझे दे दे मॉ बनूँ प्रसाद निराला।
तन मेरा मस्जिद बन जाये मन बन जाय शिवाला।।
जले श्वास में दिया प्यार का कचन सी ही काया,
हृदय बने मॉ मधुवन तेरा गुँजे गीत अगाया।
सात सुरों की धार बहा दे जीवन हो मधुशाला।।1।।
गीत बने तेरी आरतिमॉ पक्ति–पंक्ति हो पूजा।
ग़ज़ल–ग़ज़ल में छन्द–छन्द में तू हो और न दूजा।।
ऐसा कृर्ति प्रकाश मुझे दे जैसे शीतल ज्वाला।।2।।
धर्म–कर्म तेरा चिन्तन हो अर्थ–भाव हो माया,
काम–मोक्ष की बने प्रदायिनी रहे ज्ञान की छाया।।
ऐसा वर दे दे वरदायिनि बनूँ सुमिरनी माला।।3।।
तेरी सुधि का दीप जलाऊँ गुण गाऊँ नित तेरा,
मानवता की राह चलूँ मैं रहे शान्त मन मेरा।
शब्द–शब्द में अर्थ–शिखा हो भाव–भाव उजियाला।।4।।

## ग़ज़ल

**बीज नफरत का मुहब्बत आज दिल में बो गयी,**
**कल तलक अपनी रही अब दूसरों की हो गयी।**
**जिन्दगी थी साथ मेरे पास तुम जब तक रहे,**
**जब तुम्हारा साथ टूटा जिन्दगी भी खो गयी।**
**ये मेरी बद्‌किस्मती थी या तुम्हारी बद्‌दुआ,**
**लबों पर जो भी हॅसी थी ऑख उसको धो गयी।**
**नींद से मुझको जगाकर सॉस ने मुझसे कहा,**
**जिन्दगी जो रक्स करती थी अभी तक वो गयी।**
**मैं तो हूँ तन्हा सफर में और लम्बी उम्र है,**
**अपनी मंजिल थी जो 'गुलशन'आज थककर सो गयी।**

आवश्यक सूचना : पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

धारावाहिक उपन्यास

# दिल का पैगाम

✍ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

### पूर्व कथा

अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है. अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है. अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक-दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है. सावन को अनु का पता ढूढते-ढूढते मोना नामकी एक लड़की मिलती है.दो दिन की मुलाकात में ही दोनों के बीच प्रेम पनप जाता है. सावन, अनिल, अनु और मोना कोर्ट मैरिज करते है. सावन, अनु के घर जाता है उसकी मम्मी उसे जान से मारने को कहती है लेकिन सावन की चतुराई से वे शांत हो जाती है.सावन प्रेम विवाह पर एक सम्मेलन आयोजित करवाता है. सावन सम्मेलन में अनिल व अनू के मम्मी-पापा से अपने लड़का व लड़की की पसंद के लड़के से शादी करने का वचन लेता है. अनिल के पापा अनु को देखकर बहू का आर्शिवाद देते हैं. सावन अपने घर जाता है वहॉ उसकी शादी को लेकर उसके परिवार वाले कहते हैं. अनिल और अनु की शादी का बिना दहेज के रास्ता क्लीयर न हो पाने के कारण सावन उदास होकर पार्क में बैठा होता है. वहीं मोना आती है और सावन की उदासी कारण पूछती है. सावन बताता है. मोना अनिल की मम्मी से मिलती है और अधिक दहेज लेकर आयी बहुए द्वारा सांस की दुर्दशा को बताती है. अनिल की मम्मी मोना की कहॉनियों से द्रवित हो जाती है और अनिल की शादी अच्छी बहू देखकर बिना दहेज करने को तैयार हो जाती है. **और अब आगे.....**

### 18वीं किस्त

सावन और मोना दोनों एम.बी.ए. कोर्स पूराकर सर्विस की तैयारी में पूर्णरूपेण जुट जाते है. विभिन्न जगहों पर वे अर्जी देते हैं लेकिन सफलता उनके हाथ नहीं लगती. मोना को कहीं लड़की होने या आरक्षण के कारण सफलता मिलती भी तो सावन का न होने के कारणा वह उसे ज्वाइन नहीं करती. मोना अपने मम्मी–पापा को कोई न कोई बहाना बनाकर छुपा ले जाती. वे दोनों ही साथ में फार्म खरीदते, भरते और भेजते, पर मंजिल तक पहॅुचने के लिए अलग–2 हो जाते और मंजिल पर दोनों एक हो जाते. क्योंकि साक्षात्कार के समय उसके मम्मी–पापा साथ न होते. ऐसे में उन्हें एक चिरपरिचित साथी के साथ साक्षात्कार से सम्बंधित बातें करने का अच्छा अवसर मिल जाता.

**सावन और मोना दोनों एम.बी.ए. कोर्स पूराकर सर्विस की तैयारी में पूर्णरूपेण जुट जाते है. विभिन्न जगहों पर वे अर्जी देते हैं लेकिन सफलता उनके हाथ नहीं लगती. मोना को कहीं लड़की होने या आरक्षण के कारण सफलता मिलती भी तो सावन का न होने के कारण वह उसे ज्वाइन नहीं करती. मोना अपने मम्मी–पापा को कोई न कोई बहाना बनाकर छुपा ले जाती. दोनों का एक ही विभाग में वरिष्ठ व कनिष्क के पद पर चयन हो जाता है. अनु के पापा अपने रिश्तेदारें के साथ अनिल के घर जाते है. वहां सावन अनिल की मम्मी व भाभियों द्वारा दहेज की लिस्ट थमाता है. लिस्ट में–लड़के वालों की तरफ से सबसे बड़ी डिमांड है, जो बहुत ही कीमती है, जिसे हर लड़की वाला नहीं दे सकता. वह अच्छी, सुसभ्य, सुसंस्कृत, सॉस की प्यारी और गुणी, लड़की बस” सभी हॅसते है. दूसरी बस बारातियों की इज्जत व खातिरदारी अच्छी तरह से होनी चाहिए.**

साक्षात्कार के बाद फिर दोनों अलग हो जाते. दोनों का यह विचार था कि दोनों एक ही जगह, एक ही विभाग में नौकरी करेंगे. और नहीं तो फिर केवल सावन करेगा. जी.के.ग्रुप की एक नई फैक्ट्री लगती है. वहॉ दोनों अप्लाई करते है और सौभाग्यवश दोनों को चुन लिया जाता है. दोनों एक ही विभाग में थे. सावन को हेड और मोना को उसीका जूनियर पद प्राप्त होता है. सोमवार पन्द्रह जून को यानि सावन के जन्मदिन के दिन ही दोनों पद भार ग्रहण करते है. एक साथ दो यादगार खुशियां. मोना अपनी मम्मी को फोन करती है–

“हैलो, मम्मी, आज कुछ ज्यादा देर हो सकती है. इसलिए शाम को थोड़ी देर हो जाने पर घबराइएगा नहीं.”

“ठीक है बेटा! लेकिन यह प्रयास करना की ज्यादा समय न हो. अगर कोई दिक्कत होगी तो मुझे फोन कर देना. मैं लेने आ जाऊँगी.”

“ओ.के. मम्मी”

आज पहला दिन होने के कारण उन्हें जल्दीही छुट्टी मिल जाती है. वे दोनों कार से एक पार्क में जाते है. (सावन के हाथों, ललाट पर मोना चुम्बन देते हुए कहती है)“सावन, आज का दिन कितना खुशी का दिन है. तुम्हारा जन्म दिन तो था ही, इसकी महत्ता आज हमें साथ–साथ सर्विस ज्वाइन करने से और बढ़ गयी है. अब अगले 15 जून को एक और खुशी शामिल कर लेना.”

(आश्चर्य से)“माई डियर, कैसी खुशी होगी अगली. थोड़ा हम भी तो नजर फरमायें.”

“थर्ड पर्सन.”

“ओह! मोना की तैयारी.”

“नहीं! छोटा सा, प्यारा सा गुलाब सा, बिल्कुल तुम्हारे जैसा किन्तु छोटा–सा, जो गोद में खेल सके ऐसे सावन की” “अरे भाई, तुम

कबसे जादू जान गई? मुझे बच्चा बनाओगी क्या? अगर मुझे बच्चा बनाओगी तो मैं सर्विस कैसे करूँगा? फिर केहॉ–केहॉ करके रोऊगा. तुमको मुझे चुप कराने में सारा वक्त निकल जायेगा."

"नहीं तुम नहीं! बल्कि तुम्हारा अंश." "वाह भाई, वाह! मान गया मोना. यानी तुमने अब शादी करने का हंगामा करने की ठान ली है. ऐसा करते हैं अब तुम अपने परिवार के सदस्यों को पटाओं और मैं अपने. लेकिन यह ध्यान रखना कि मैंने अपने पापाजी से कुछ वायदा किया है."

"अरे सावन! मुझे तुम्हारे द्वारा किए गए प्रत्येक वादे का इस जन्म तो क्या अगले सात जन्मों तक भी ख्याल रहेगा."

(मोना के सिर को चुमते हुए)मुझे ऐसी ही बीबी की उम्मीद है तुमसे.

.................

सावन मि. डी.एन.सिंह से मिलता है, और बताता है–

"अंकल, आंटी अब कुछ कम दहेज मिलने पर भी शादी कर सकती है. एक बार फिर उनसे आप कहिए. अगर लड़की देखने की बात है तो यह भी चलेगा. मुझे पूर्ण विश्वास है कि अनु, आंटी को अवश्य ही पसंद आएगी."

"बेटा, क्या तुमने कोई जादू कर दिया, जो वह इतनी जल्दी पिघल गयी."

"बस अंकल, ऐसा ही समझे. काम होना चाहिए था सो वह हो गया, चाहे जैसे भी हो."

"ठीक है बेटा, तुम बैठो मैं अभी बात करके आता हूँ और तुम्हें वर्तमान परिणाम से भी अवगत कराता हूं." (डी.एन.सिंह बाते करके आते हैं. अनिल की मम्मी लड़की देखकर, पंसद आनेपर शादी करने को तैयार हो जाती है.)

"क्या हुआ अंकल?"

"सावन बेटे यह तो मानना ही पड़ेगा कि तुम बाकई बुद्धिमान हो. तुम जिस भी संस्था, ऑफिस में कार्य करोगे वहॉ बड़ी से बड़ी समस्या भी हल हो जाएगी. तुम्हें तो बिना इंटरव्यू दिये फैक्ट्री वालों को रख लेना चाहिए." "अरे अंकल, आप क्यों इतना....."

(बात काटते हुए)"नहीं बेटा! मैं झूठी तारीफ कभी नहीं करता. फिर तुम मेरे लड़के की तरह हो. और एक बाप अपने लड़के की तारिफ, चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हों, उससे कभी नहीं करना पंसद करेगा. खैर, तुम अनुको उसी मंदिर में, जहॉ मुझे उससे मिलवाये थे, वहीं लेकर आ जाना. वहीं अनिल की मम्मी भी मिलेगी"

"जैसा आपका आदेश अंकल."

(सावन अनु से मिलकर अनु को सारी बातें बताता है.)

"देखो अनु, यह तुम्हारी अंतिम परीक्षा है. इस परीक्षा में अगर पास हो गयी तो समझों बात सौ प्रतिशत पक्की. वरना हमें दूसरी विधी का सहारा लेना पड़ेगा."

"नहीं भइया, मुझे पूर्ण विश्वास है कि अगर आप मेरे साथ हैं तो मैं इस परीक्षा में तो क्या संसार की बड़ी से बड़ी परीक्षा भी पास हो सकती हूॅ."

"क्यों मेरे को इतना...."

"नहीं भइया, आप के संरक्षण में बड़े से बड़ा खतरा, चीज ए.बी.सी जैसी लगने लगती है."

(निर्धारित समयानुसार सभी हनुमान मंदिर पर मिलते है. अनिल की मम्मी अनु को देखती है और उससे ढेर सारे प्रश्न पूछती है. अन्ततः संतुष्ट होकर मि. डी.एन.सिह वाले आर्शीवाद वह भी बोल जाती है. इस अप्रत्याशित उत्तर से सावन, अनु और मि. डी.एन.सिंह बहुत प्रसन्न होते है.)

अनु के पापा एस.एन.सिंह को, सारी बाते विशेषकर शादी की सावन बताता है.

रस्म अदायगी के लिए एस.एन.सिंह कुछ रिश्तेदारों के साथ अनिल के घर जाते हैं.

"नमस्कार भाई साहब."

"नमस्कार. आइए–आइए, बैठिए आप लोग."

"सुना है आपका एक लड़का है जो शादी करने को अभी बाकी है. अगर आपका शादी करने का इरादा हो तो उसका कुडली हमें दे दीजिए."

"भाई शादी तो मुझे इसी साल करनी है. बशर्ते कोई अच्छा रिश्ता मेरे लायक मिले तो."

एक अनु के रिश्तेदार बोलते है–

"अरे भाई, अगर आप चाहें तो मेरी लड़की आपको पसंद आ सकती

है.”
“ठीक है, अरे अमिल जरा अनिलकी कुंडली लाना.”
पंडित को बुलाकर गनना–बनना दिखाया जाता है. गनना–बनना तीस गुन से बनता है. फिर शादी की बात आगे बढ़ती है. उनकी आपस की बातों से किसी को भी यह नहीं लगता कि यहॉ तो सब कुछ पहले से ही हो गया है.
एक रिश्तेदार–“अरे भाई, डी.एन. जी और सावन आप लोग लेन देन की भी कुछ बात तो करिए जो प्रत्येक शादी का मुख्य बात होती है.”
“देखिए भाई, सावन ही जो कहेगा, वहीं होगा. उसी से पूछिए, शादी कहॉ होगी, किससे होगी और कब होगी, कितना लेना देना है. वह तो अनिल का मित्रा भी है.”
“अरे भाई सावन, अब तो सबकुछ, दोनों तरफ के तुम ही हो, बात आगे बढ़ाओं.”
“ठीक है. थोड़ी देर आप लोग बातें करे. जरा मैं अन्दर भाई साहब लोगों से फायनल राय ले लूँ.”
सावन अंदर जाता है और अनिल की मम्मीर की वर्तमान लिस्ट को लाता है.
“भाइयों, भाभियों की लिस्ट ये है?” सभी लोग लड़के की योग्यतानुसार लिस्ट देखकर चौकते है.
“बेटा, तुम ही लिस्ट पढ़ दो.”
“लड़के वालों की तरफ से सबसे बड़ी डिमांड है, जो बहुत ही कीमती है, जिसे हर लड़की वाला नहीं दे सकता. वह अच्छी, सुसभ्य, सॉस की प्यारी और गुणी, लड़की बस. ”
सभी हँसते है.
मैं स्वेच्छा से छोड़े जाता हूँ कि आप लोग क्या देते है. बस बारातियों की इज्जत व खातिरदारी अच्छी तरह से होनी चाहिए. बाकी एस.एन. अंकल की एक ही लड़की है. इसलिए उनको जो भी देना होगा अपनी लड़की और दामाद को दे देंगे.”
“अरे भाई, डी.एन. जी, फिर भी कुछ तो बताइए.”
“आपको सावन की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा है. उसकी उम्र पर मत जाइए. वह जो भी कह रहा है, कहेगा, वहीं होगा.”
शादी की तारिख पक्की हो जाती है. सभी रास्तें में बड़े खुश होते है कि अरे मामाजी, चाचाजी आपने तो बहुत ही सस्ते में, बहुत जल्दी इतनी आसानी से रिश्ता प्राप्त कर लिया. आप कितने भाग्यशाली है. वरना लड़की वालों का लड़के वालों का लड़के के घर जाते–जाते, जूता घिस जाता है. और इतने अच्छे रिश्ते के लिए दहेज की लिस्ट देखकर होश उड़ जाते है. वाकई बहुत अच्छा रिश्ता आपको मिल गया.
“भाई, यह सब तो उस सावन के कारण हुआ. अगर वह न होता तो देखते, पता नहीं क्या होता.”

## ग़ज़ल

अतीक इलाहाबादी

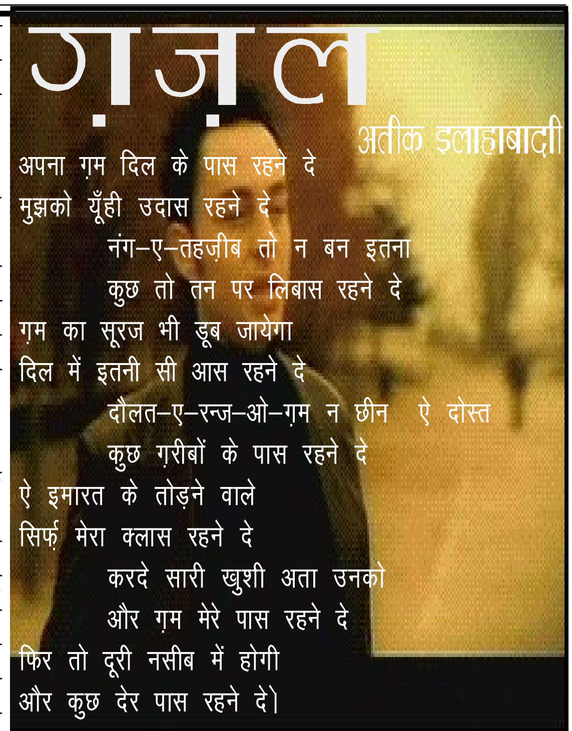

अपना ग़म दिल के पास रहने दे
मुझको यूँही उदास रहने दे
नंग–ए–तहज़ीब तो न बन इतना
कुछ तो तन पर लिबास रहने दे
ग़म का सूरज भी डूब जायेगा
दिल में इतनी सी आस रहने दे
दौलत–ए–रन्ज–ओ–ग़म न छीन ऐ दोस्त
कुछ ग़रीबों के पास रहने दे
ऐ इमारत के तोड़ने वाले
सिर्फ़ मेरा क्लास रहने दे
करदे सारी खुशी अता उनको
और ग़म मेरे पास रहने दे
फिर तो दूरी नसीब में होगी
और कुछ देर पास रहने दे।


स्थापित 1982 मान्यता प्राप्त रजिः 1030

किशोर गर्ल्स हाईस्कूल एवं कॉलेज

एवं किशोर कॉन्वेन्ट स्कूल

कक्षाए : नर्सरी से कक्षा 12 तक

प्रवेश प्रारम्भ सत्र–2004–05

प्रबंधक
वी.एन. साहू

82/102, मीरा पट्टी, टी.पी. नगर, जी.टी.रोड, इलाहाबाद

प्रधानाचार्या
कु0 सविता सिंह भदौरिया

# खिलौना बन गई देवरिया जिले की मनु यादव की शादी

मनु यादव ने अपने परिवार व लड़की मंजू यादव के परिवार की रजामंदी से सम्मानित गवाहों की मौजूदंगी में कोर्ट मैरिज की सारी कार्यवाही पूरी की. मनु के कोर्ट मैरिज का कागज नहीं बना. सारे कागजात पूरे हुए वकालत नामा बना. फिर भी न हो सकी मंजू यादव मनू यादव की. मनु ने बतौर वकील कोर्ट फीस सहित,कागजात के लिए १२०० रुपये दिए. यह मनु यादव की दूसरी शादी थी. पहली शादी १९९१ में हुई. सजधेज कर गाजे-बाजे के साथ मनु यादव की बारात भी गई मगर गंवना में लड़की वालो ने विदा करने से इंकार कर दिया

✍**संतोष कुमार दूबे,** ब्यूरो, देवरिया

**दे**वरिया जिले, बरहज बाजार तहसील व थाना के भागलपुर ब्लाक, टीकर के न्याय पंचायत निवासी स्व0 रामसत यादव के दो पुत्रों में बड़े पुत्र सियाराम यादव व छोटे पुत्र मनु यादव हैं. मनु यादव की पहली शादी 1991 में अजपुरा देवार जिला आजमगढ़ निवासी ब्रहमदेव यादव की बहन कलावती से बड़े ही धुमधाम से सम्पन्न हुआ. शादी में विदाई नहीं हुई थी. एक साल बाद जब गवना की बात चली तो लड़की के घर वालों ने अपनी बहन को मनु यादव के साथ भेजने से इंकार कर दिया. लड़की वालों का आरोप था कि लड़के के पास न तो खेती–बारी है, और नहीं लड़का कुछ करता है. पंचायत बुलाई गई. लेकिन पंचायत में भी बात नहीं बनी. पंचायत ने हार कर यह फैसला लिया कि दोनों समान–आदान प्रदान कर दें. पंचायत के आदेशानुसार समान का आदान प्रदान कर दिया गया. कलावती की दूसरी शीघ्र ही दूसरी जगह कर दी गयी. मगर मनु यादव कुँवारा ही रहा. उसकी शादी में भगवान को एक दूसरी लीला दिखानी थी.

लगभग 12 वर्षो के अंतराल के बाद 23 मई 2003 में देवरिया जिले के ही ग्राम परसिया–मगहरा के पास निवासी रामजी यादव की पुत्री मंजू से दूसरी शादी करने की बात चली. मंजू यादव की भी यह दूसरी शादी थी. मंजू के साथ उसकी पहली शादी की एक दो वर्ष की लड़की भी है. लड़की के पिता रामजी यादव ने शादी के कागजात तैयार कराने के नाम पर धोखे से मनु यादव से 1200 रुपये भी ऐंठ लिए. लड़की के साथ एक बच्चा है, इसकी भी जानकारी देर से दी गई. मंजू यादव की पहली शादी देवरिया जिले के बड़का गांव में हुई थी. उसका पहला पति शराबी था. वह उसका समान लेकर बेचता था और उसे मारता–पिटता था इसलिए मंजू के परिवार वालों ने वहां से बुला लिया और दूबार वहां न भेजने का निर्णय लिया.

देवरिया जिले के ग्राम सोनाड़ी के रामअशीष यादव की अगुआई में 23 मई 2003 में देवरिया कोर्ट में वकील अरविन्द कुमार दुबे की देख–रेख में लड़की व लड़के के पक्ष मय गवाह सभी लोग इक्टडे हुए. गवाहों में वर पक्ष से टीकर के जयप्रकाश दूबे पुत्र श्री सुदामा दूबे, रामअशीष यादव, ग्राम –सोनाड़ी, पोस्ट–सोनाड़ी, जिला देवरिया तथा कन्या पक्ष से ग्राम परसिया निवासी लड़की के पिता परामजी यादव, वहीं के पं. अनुपम, मुख्तार यादव, श्रीमती मोती रानी यादव ग्राम प्रधान परसिया बतौर गवाह वकालत नामे व अन्य कागजात पर दस्तखत किए. देवरिया कोर्ट में कागज तैयार करने के बाद वकील के कहने पर दोनों पक्ष बरहज बाजार तहसील में वहीं दोनों पक्ष गए. बरहज बाजार थाने के नजदीक सरयू नदी के तट पर

एक मंदिर में गठबंधन हुआ और लड़की की मांग में सिंदूर मनु यादव ने डाला और मंजु यादव को अपने घर ग्राम टीकर ले गया. गांव में वह सात दिनों तक रही. सात दिन बाद लड़की का पिता आया और लड़की की मां के बीमार होने को बताकर मंजू यादव को अपने साथ लिवा ले गया और दो दिन बाद विदा करने को कहा. दो दिन बाद जब मनू, मंजू को लेने उसके गांव परसिया गया तो लड़की के पिता ने कहा–हम विदायी नहीं करेंगे. उसने कहा कि हम लोगों की विरादरी में अंतर है. लड़की तैयार थी लेकिन उसके परिवार वाले उसे विदा करने को तैयार नहीं थे. कुछ दिनों बाद लड़के मनु यादव ने पुनः विदायी की बात की तो लड़की की बहन के ससुर इन्द्रदेव यादव, पूर्व प्रधान, ग्राम सौनौली, जिला–देवरिया ने जबरदस्ती झूठ बोलकर लड़की को नहीं आने दिया. इस मुद्दे पर कई बार पंचायत बुलाई गयी. पंचायत में ग्राम टीकर के जयप्रकाश दूबे (गवाह), सियाराम यादव (लड़के का बड़ा भाई),छेदी यादव, वीरेन्द्र शर्मा (लड़के के पड़ोसी) आदि ने पंचायत की लेकिन पंचायत में सफलता नहीं मिली. विश्वस्त सूत्रों कें अनुसार यह भी पता चला है कि लड़की को छुपाकर उसके बड़ी बहन के ससुर इन्द्रदेव यादव ने कहीं रक्खा है और उसकी तीसरी शादी की तैयारी पूरी कर ली गई है.

इस बीच जब मनु यादव ने अपने वकील से इस संदर्भ में बातचीत की और कोर्ट मैरिज के कागजात मांगे तो वकील ने हीला हवाली करके पूरी फाइल लौटा दी. इसमें से कोई भी कागज परिवार न्यायालय में जमा नहीं हुआ है. नहीं शादी का प्रमाण पत्र ही मनु यादव को मिला है. जबकि इस कार्य हेतु वकील ने मनु यादव से काफी पैसे ले लिये है.

बहुत ही दुःख इस बात पर होता है कि एक पूर्व शादी के बिना तलाक लिये समाज के जिम्मेदार व न्याय केसूत्रध ार की कड़ी वकील ने कैसे दूसरी शादी करने की सलाह दे दी. दूसरी बात अगर कोर्ट मैरिज हुई तो मैरिज प्रमाण पत्र कहां गया. कागजों को देखकर तो यहीं लगता है कि लड़के को कोर्ट मैरिज के नाम पर बेवकुफ बनाया गया. लड़के के अनुसार उसे बरहज तहसील में पेशकार के सामने पेश किया गया था. अगर पेशकार के सामने पेश किया तो फाइल कैसे बाहर आ गयी और लड़के को मिल गयी.

सबसे बड़ी बात तो यह है कि जो पिता खुद गवाह था वह 31 मई 2003 को न्यायालय विशेष विवाह अधिकारी, बरहज के समक्ष, धारा विशेष विवाह अधिनियम के तहत खुखन्दु थाना में यह प्रार्थना अपनी लड़की मंजे के द्वारा प्रस्तुत किया –'प्रार्थिनी को बहला–फुसलाकर मन्नू द्वारा प्रार्थिनी व प्रार्थिनी के पिता को दिनांक 23 मई 2003 को अदालत लाकर फोटो खिंचवाया व नि.अ. लगाकर कुछ कागजात प्रस्तुत किये गये. प्रार्थिनी वास्तविकता समझने के बाद आज अदालत आयी है तथा उक्त कार्यवाही को निरस्त व खारिज करेन की इच्छुक व तत्पर है. अतः पूर्व में प्रार्थिनी द्वारा दिया गया सहमति नोटिश खारिज किया जाये व प्रार्थिनी का फोटो वापस किया जाये.'

इस घटना को देखकर तो यही लगता है कि मंजू कोई लड़की नही बल्कि खिलौने वाली गुड़िया हो जिसकी शादी दिन में कई बार बच्चे खेल खेल में कर देते हैं. क्या हमारा समाज इतना गिर गया है. अगर लड़का विरादरी का नहीं था तो शादी हीं क्यों की? अगर हो गयी तो...? इससे तो लगता है कि लड़की एक हफ्ते किसी और के साथ सोयेगी और अगले हफ्ते किसी और के साथ. क्या यहीं 21वीं सदी का विकसित भारत है.

# एक रात की दुल्हन

✍ ब्यूरो

आज शादियों में बिचौलियों के द्वारा इतनी धोखाधड़ी की जा रही है कि इसका कोई जवाब नहीं. स्वयं वर की तलाश और वह भी नजदीकी रिश्तेदार में पढ़े लिखे लोग धोखा खा जाएं तो इसे विडंबना ही कहा जाएगा. समाचार पत्र में विज्ञापन देखकर तय हुए रिश्ते में यदि धोखाधड़ी हो जाए तो बात समझ में आती है.

ग्राम बलवा गुजरान, जिला मुजफ्फरनगर के सेना के सूबेदार की बेटी ग्रेजुएट अंजू का गंगोह/सहारनपुर, क्षेत्र के कम्हेड़ा निवासी रफल सिंह के पुत्र शेखर के साथ तय हुआ. सूबेदार को अपनी पोस्ट ग्रजुएट बेटी अंजू के लिए योग्य वर की तलाश एक अरसे से था. जब उसे पड़ोसी गांव के एक परिचित और रफल सिंह के मामा ने यह बताया कि उसके भांजे का लड़का आईआईटी से इंजीनियर है और मुंबई में अप्रेंटिंस कर रहा है तो सूबेदार वीरेन्द्र सिंह ने बिना कोई देर किए झटपट रिश्ता तय कर दिया.

रोचक तथ्य यह है कि शादी के दिन तक गांव कम्हेड़ा के लोगों को यह नहीं पता था कि शेखर मुंबई में नहीं, बल्कि पानीपत की किसी फैक्टरी में मामूली नौकरी कर रहा है. विशेष बात यह है कि धोखे की शिकार हुई अंजू के मामा, मौसा और फूफा भी आस–पास के रहने वाले हैं, और राजनीतिक एवं सामाजिक रुप से अच्छा रुतबा रखते हैं, लेकिन इन लोगों से भी दूल्हें के बारे में कोई पूछताछ नहीं की गई.

इंजीनियर दामाद पाकर सूबेदार वीरेंद्र खुशी से फूलाा नहीं समाया. उसने बड़ी शान और शौकत के साथ बेटी अंजू की शादी की और दहेज में 50 हजार की नगदी, मोटरसाइकिल तथा रंगीन टीवी समेत भरपूर दान दहेज दिया. आंखो मे बड़े अरमान लेकर अंजू ने ससुराल में कदम रखा. उसकी बड़ी आवभगत भी हुई. मुंह दिखाई की रस्म के दौरान पानीपत से आई एक महिला से जब उसे पता लगा कि शेखर मुंबई नहीं रहता और वह इंजीनियर न होकर पानीपत में मामूली नौकरी करता है, यह सुनकर अंजू की आंखो के सामने अंधेरा छा गया. स्वयं को संयमित कर उसने मायके खबर भिजवाई और परिजनों को सवेरे ही आने के लिए कहा.

अंजू के दिलों दिमाग पर वास्तविकता का ऐसा गहरा असर हुआ कि उसने पति के साथ सुहागरात मनाने से इनकार कर दिया और खाने–पीने को भी हाथ नहीं लगाया. अंजू बिना किसी को कुछ बताए बड़े सवेरे ही अपने मायके रवाना हो गई. तत्काल बिचौलिया बने रफल सिंह के मामा को बुलाया गया और शाम को जब शेखर पत्नी को लेने ससुराल पहुँचा तो उसे रात में ही बैरंग लौटा दिया गया.

अगले दिन ही सूबेदार सिंह, बिचौलिया मामा तथा अन्य लोगों के साथ कम्हेड़ा आ पहुंचे और उन्होंने शेखर के पिता को खूब खरी खोटी सुनाते हुए रिश्ता खत्म करने की बात कही. रफल सिंह का कहना था कि शेखर ने आईआईटी मे प्रवेश तो लिया था, मगर बाद में उसे मुंबई छोड़कर आना पड़ा. कुछ लोगो ने संबंध कायम रखने की बात कही तो सूबेदार बिफर उठा और उसने तत्काल रिश्ता समाप्त करने की घोषणा कर दी.


## हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुराण–साहित्य

| | | |
|---|---|---|
| 1. अग्निपुराणम् | अनु0 श्री तारिणीश झा<br>डॉ0 घनश्याम त्रिपाठी | 350.00 |
| 2. ब्रह्मपुराणम् | अनु0 श्री तारिणीश झा | 500.00 |
| 3. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (पूर्व भाग:) | अनु0 श्री तारिणीश झा<br>श्री बाबूराम उपाध्याय | 275.00 |
| 4. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (उत्तर भाग:) | श्री तारिणीश झा<br>श्री बाबूराम उपाध्याय | 350.00 |
| 5. बृहन्नारदीयपुराणम् (पूर्व भाग:) | अनु0 श्री तारिणीश झा | 225.00 |
| 6. बृहन्नारदीय पुराणम् (उत्तर भाग:) | श्री तारिणीश झा | 125.00 |
| 7. मत्स्यपुराणम् (पूर्व भाग:) | अनु0 श्री रामप्रताप त्रिपाठी | 275.00 |
| 8. मत्स्यपुराणम् (उत्तरभाग:) | अनु0 श्री रामप्रताप त्रिपाठी | 150.00 |
| 9. मार्कण्डेय महापुराणम् | स्व0 पं0 कन्हैयालाल मिश्र | 275.00 |
| 10. वायुपुराणम् | अनु0 श्री रामप्रताप त्रिपाठी | 220.00 |
| 11. कूर्मपुराणम् | अनु0 श्री तारिणीश झा<br>डॉ0 तमिस्रा चटर्जी | 250.00 |
| 12. स्कन्दपुराणम् (केदार खण्ड) | अनु0 डॉ0 शिवानन्द नौटियाल | 350.00 |
| 13. भविष्यमहापुराणम् (प्रथमखण्ड) | अनु0 श्री बाबूराम उपाध्याय | 325.00 |
| " (द्वितीयखण्ड) | '' | 325.00 |
| " (तृतीयखण्ड) | " | 325.00 |
| 14. वामनपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन | डॉ0(श्रीमती) मालती त्रिपाठी | 100.00 |
| 15. मूल रामायणम् | संपा0 डॉ0 प्रभात मिश्र 'शास्त्री' | 5.00 |
| 16. पुराणों में गंगा | श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री | 50.00 |

**पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें : श्री विभूति मिश्र,**
प्रधानमंत्री–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग12 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद–3

नवोदित कवि

## ग़ज़ल

क्या हुआ हाथ अगर मैंने बढ़ाना चाहा
आपने खुद भी तो दामन न बचाना चाहा
आपके दम से थी रंगीन ये महफिल यूँ भी
मैंने महफिल में फ़क्त रंग जमाना चाहा
मेरे जज़्बात उभर आये मेरे चेहरे पर
मैंने तूफान को सीने में दबाना चाहा
कैसे नादान थे हम तेज हवा में अक्सर
आँसुओं को भी चिराग़ों सा जलाना चाहा
सी लिये होठ जो मैंने तो जहाँ वालों ने
मेरे खामोशी पे इल्ज़ाम लगाना चाहा
मैं अकेली थी रवाँ जानिबे मंजिल "सागर"
आपने भी तो मेरा साथ निभाना चाहा

फ़क्त–सिर्फ, केवल जानिबे–ओर, तरफ

शिप्रा श्रीवास्तव "सागर"
304, जाफरा बाजार, निकट उत्तरी पाकड़ का पेड़,गोरखपुर–273001, उ.प्र.

## ग़ज़ल

अपनेपन का बोध करा दो।
नफरत की दीवार गिरा दो।।
अब प्रदूषण मत फैलाओ।
इस धरती को स्वर्ग बना दो।।
एकता के बन्धन में बँधकर।
आपस के मतभेद मिटा दो।।
तुम चाहो तो अपने बल पर।
पतझड़ में भी खिला दो।।
"रचश्री" की है प्रार्थना तुमसे।
एक सुन्दर माहौल बना दो।।

**रमेश चन्द्र श्रीवास्तव**
एल.आई.यू., कोतवाली कैम्पस, फतेहगढ़, उ.प्र.पिन:209601

## राजधानी की पहचान

दिन दहाड़े घर में/ बैंक में/ दूकान में
हथियार बंद लुटेरों द्वारा लूट
घरेलू नौकर द्वारा था
मलकिन वृद्ध महिला की
गला घोंट कर हत्या
मालिक के घर की लूटपाट
अज्ञात व्यक्ति का सड़ा गला शव
गंदी नाली मेंउभर आना
पार्क के झूले मेंफांसी लगा कर
गर्भिणी कन्या की खुदकुशी
बेरोजगार युवका का
उधारी न चुका पाने से
विष खाकर आत्म हत्या
स्कूटर सवार को गली में रोककर
घड़ी और रूपया लूटना
पूर्व प्रेयसी को गोली मार कर मार डालना
काट काट कर तंदूरी की भट्टी मेंजला देना
छात्राओं/ पर्यटक महिलाओं के साथ
पुलिस द्वारा बलात्कार
ये सारी घटनाएं
यदि किसी शहर में
दिन दिन घटित होती है
तो वह
एक महान देश की राजधानी है.

**के.जी.बालकृष्ण पिल्लै**
गीता भवन,पेरूर कटा,पोस्टः तिरूअनन्त पुरम
fiu% 695005

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

# स्नेहागन कला केन्द्र

**शाखा :** 1. एल.आई.जी. 93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
2. एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

0सिलाई 0कढ़ाई
0पेंटिग 0कम्प्यूटर
0ब्यूटिशियन
0इंग्लिश स्पोकेन
0अन्य प्राफेसनल कोर्सेस एवं व्यवसायिक कोर्सेस

**नोटः** हमारे यहाँ अनुभवी अध्यापको द्वारा ट्रेनिंग की व्यवस्था है। ट्रेनिग के उपरान्त प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाता है।

**विभिन्न क्षेत्रों में शाखा खोलने के इच्छुक व्यक्ति/महिलाएं शाखा कार्यालयों में सम्पर्क करें**

## लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.कागज़ के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।
2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।
3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।
4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे। हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

# "सहर"

✍अशोक गुप्ता

## पूर्व कथा

शाम का समय था सावन के महीने की रिमझिम फुहार शरीर में रोमान्चक उन्माद जगा रही थी हवा का झोंका मन को आनन्द विभोर कर रहा था कि अचानक एक चीख ने विवेक का ध्यान भंग कर दिया वह चीख किसी लड़की की थी जो खुशरूबाग के मजार के पीछे से आ रही थी विवेक ने अविलम्ब उस तरफ दौड़ा लगा दी.गुड़ों से छुड़ाकर विवेक, प्रमिला को लेकर उसके घर जाता है. प्रमिला अपने पापा से विवेक के बारे में बताती है. उसके पापा बैठने को कहते है लेकिन उसकी विमला उसे धन्यबाद कहकर कहती है जाओ.जाओ. उनकी यह मुलाकात धीरे–धीरे प्यार की पीगें लेने लगती है.

## सांतवा भाग

{सुधीर अपने रूम से निकल रहा है धनराज सेठ का प्रवेश होता है वह अपने लड़के बेटे सुधीर की ओर देख प्यार से मुस्करा उठते है सुधीर उनका बड़ा बेटा था अनूप छोटा और पिंकी सबसे छोटी बहन तभी उनकी पत्नी शान्ती भी आ गई}

शान्ती–क्या हुआ आज बड़े प्यार से बेटे को देख रहे हैं कोई खास बात है क्या

{सुधीर भी चौंक कर अपने पापा को देखता है और उनके पास आ जाता है}

सुधीर–आप आ गये पापा–यह देखिए मेरा रिजल्ट बी0 एस0 सी0 फर्स्ट क्लास,

शान्ती –सचमुमच

धनराज–वाहॅ बेटा, तूने तो हमारा नाक ही उचॉं नहीं किया है बल्कि अपनी किस्मत को चमकाया भी है आज ही मैं तेरे लिये रिश्ते की बात तय कर आयरा हूँ मेरे भी अरमान थे कि मैं सुन्दर लड़की अपने बेटे के लिए बारात के साथ गाजे बाजे के साथ तेरा व्याह करूँ कि सारी दुनियॉं देखे

सुधीर–पापा– अभी मेरे शादी का विषय छोड़ दीजिए मैं अभी शादी वादी नहीं करूगॉं मुझे आप जैसा काबिल डा0 बन जाने दीजिए फिर मैं शादी करूगॉं और अपनी पसन्द की बात भी बताऊँगा,

शान्ती– अब मॉं बाप अपने बेटे की शादी पूछ कर करेगें क्यों बेटा,

सुधीर– ओह मॉं, आप कुछ दिन रूक जाइए मैं सोच कर बताऊँगा

{धनराज और शान्ती दोनो ही हॅसने लगते है और सुधीर अपने पापा को और मॉं को मिठाई खिलाता है}

{अनूप और पिंकी भी दौड़ते आते है}

अनूप–भइया हमें भी मिठाई खिलाइए

पिंकी–हमें भी,

सुधीर–हॉं हॉं सब को खिलाते है मुँह खोलो,

{धनराज आगे बढ़कर अपने बेटे को गले से लगा लेते हैं}

{रेखा और प्रभिला बाग में बैठी हुई है प्रभिला विवेक का इन्तजार कर रही है उककी निगाहें चारो तरफ विवेक को तलाश रही है पास में ही कुछ बच्चों की टोली फुटवाल खेल रही है चारो तरफ वातावरण बहुत ही मोहक दिख रहा है}

रेखा–यार, तेरा हीरो तो नहीं दिख रहा हैं कब तक आयेगा

प्रभिला– वह जरूर आयेगा–देखना

रेखा–अगर वह नहीं आया तो?

प्रभिला– क्या बात करती है आ शर्त लगा ले

{तभी सुधीर की कार वहॉं आ कर रूकती है और सुधीर अपने नये तुले कदमों से उनकी ओर बढ़ता चला आता है}

रेखा– देख तेरा वो वाला हीरो तो कही नहीं दिख रहा है मगर तेरा दूसरा चाहने वाला हीरो जरूर आ रहा है

प्रभिला– यह कम्बख्त जाने कहॉं से आ गया–पता नहीं क्यों मेरे पीछे पड़ा हुआ है

रेखा– तू लड़की है यार तेरे को दो दो हीरो चाहते है

{तभी सुधीर एकदम पास आ जाता है और उन दोनो की ओर देख कर मुस्करा उठता है}

सुधीर–हलो प्रभिला–हलो रेखा कैसी हो–

रेखा–ठीक हैं

सुधीर–क्या मैं तुम लोगों के साथ बैठ सकता हूँ,{और बैठ जाता है}

रेखा–वाह जनाब बैठ भी गये इजाजत का इन्तजार भी नहीं किया,क्यों

सुधीर–अगर प्रभिला को ऐतराज हो तो मैं उठ भी सकता हूँ क्यों प्रभिला–?

प्रभिला–नहीं ऐसी कोई बात नहीं बैठ सकते हैं

सुधीर–थैक्यूं

{तभी विवेक भी आता दिखाई पड़ता है वह प्रभिला को दूर से ही देखता है और उनकी ओर आता है}


### पत्रिका के लिए सम्पर्क करें

**लक्ष्मी बुक हाउस**,सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

**पापुलर बुक डिपों,**

इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

**मि0 कमलेश कुमार**

नन्दनी बुक सेन्टर बाई का बाग, इलाहाबाद

**सरदार बुक स्टाल**

बस अड्डा के पास, सलेमपुर, देवरिया

**आलोक एजुकेशन बुक सेन्टर**

भलुअनी, देवरिया

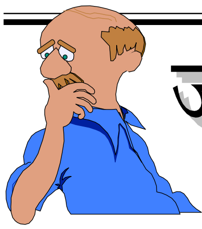

# जरा हंस दो मेरे भाय

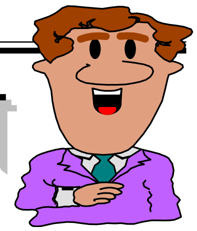

☠एक ग्राहक–भाई तुम दूध इतनी देर से क्यों लाने लगे हो?
दूधवाला–मैं क्या करुं साहब, म्यूनिसपलिटी का नल ही सात बजे आने लगा है.

☠आधी रात को डॉक्टर के घर टेलिफोन पर मरीज बोला–आप घर आने की फीस क्या लेते हैं?
डॉक्टर– सौ रुपये.
मरीज– और क्लीनिक में देखने की?
डॉक्टर–पचास रुपये.
मरीज–तो ठीक है आप तैयार होकर क्लीनिक पहुचिएं, मैं एक घंटे में आ रहा हूँ.

☠पिता– क्यों बेटा, तुम्हें यह ईनाम कैसे मिला?
पुत्र– वाद–विवाद में एक घंटा बोलने पर.
पिता– अच्छा, विषय क्या था?
पुत्र–कम बोलने से होन वाले फायदे.

☠रामपाल ने कपड़े की नई दुकान खोली थी. उन्होंने एक रात सपने में देखा कि एक ग्राहक बीस मीटर कपड़ा मांग रहा है. खुश होकर रामपाल ने थान से कपड़े फाड़ना शुरू कर दिया. तभी पत्नी जाग गई और चिल्लाई–क्या कर रहे हो? वह चादर क्यों फाड़ रहे हो? रामपाल नींद में बड़बड़ाया – कमबख्त दुकान में भी पीछा नहीं छोड़ती.

☠ ज्योतिषी ने किसी व्यक्ति का हाथ देखने के बाद उससे कहा–भाई, तुम्हारे ग्रह तो बड़े खराब चल रहे हैं. बहुत जल्द ही तुम्हारी धन संपत्ति नष्ट हो जाएगी. ग्रहों की शांति के लिए कोई उपाय करना होगा, पांच हजार रुपये लगेंगे.
व्यक्ति ने कहा– ये तो बहुत ज्यादा है, कुछ कम में काम नहीं चलेगा. ज्योतिषि ने झट से कहा–चलों, एक हजार वाला उपाय ही कर देगें. व्यक्ति ने फिर अपनी बात दोहराई, ज्योतिषि ने भी राशि कम कर दी. राशि कम करते–करते जब लेन–देन केवल 10 रुपये पर पहुंच गया तो व्यक्ति ने फिर राशि कम करने की मांग दोहराई तो ज्योतिषि ने झुझलाकर कहा–नवग्रह मिलकर भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते.

☠आत्महत्या के लिए रेल पटरी पर लेटे व्यक्ति से किसी ने पूछा–भले आदमी यहां क्यों लेटे हो?
मैं मरने के लिए यहां आया हूँ. उसने जवाब दिया.
अच्छा तो ये रोटियां साथ में क्यों रखे हो. आदमी ने पूछा.
जवाब–शायद गाड़ी लेट हो जाए.

**इस स्तम्भ में आप भी अपने पंसद के स्वरचित चुटकुलें भेज सकते है। अच्छे चुटकुलों को प्रकाशित कर पुरस्कृत भी किया जाएगा।**

## आवश्यक सूचना

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा. पत्रिका परिवार या संपादकीय परिवार से इसका कोई वास्ता नहीं होगा. विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद ही होगा. अपनी रचनाएं हमें अवश्य भेजते रहें. आपकी रचनाओं को यथोचित सम्मान देने का प्रयास करेंगे।


# M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

फीस मात्र
100/रूपये महीने

एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ, ओ लेवल, ए लेवल, पी.जी.डी.सी.ए, डी.सी.ए. एव **अन्य कोर्सेस :** टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट **कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस**

<u>विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे:</u>
कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद मो0: 3155949
**शाखा:** एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

# सयानी बेटी

✍ऊषा जैन 'शीरी'

नई नवेली बहू शोभा ने ससुराल आकर मां द्वारा बताए गए सभी नुस्खें ससुराल वालों पर आजमाने शुरू कर दिये थे. उसका पलड़ा कुछ यूं भी भारी हो चला क्योंकि सास बेटा ब्याह कर भी दुनियादारी में निपट अनाड़ी ही थी.

मां की सीख थी रिश्तेदार आकर जो भी पैसा तुझे दें चुपचाप पर्स के हवाले करना. और भी इसी तरह न जाने कितनी चालाकियां बतायीं जिनका उद्देश्य घर परिवार के लोगों को बगैर जरा भी महत्व दिये सिर्फ अपना स्वार्थ पूर्ण करने को इस्तेमाल करना था. जहां कोई मतलब होता भोलेपन का मुखौटा ओढ़ वह सास की ऐसी हां में हां मिलाती कि ममता की मारी सास बाग–बाग होकर प्राण न्यौछावर करने को तत्पर हो जाती. रुपये पैसा जेवर तो चीज ही क्या थी.

उसकी कामचोरी और चालाकी पति को मुट्ठी में कर सास के खिलाफ कर देना इन सब बातों की कलई आखिर सास पर खुलने लगी थी. भीतर ही भीतर खून के आंसू रोती वह मौत की तरफ बढ़ने लगी. वह अति संवेदनशील नारी शायद पागल होकर जल्दी ही मर भी जाती मगर उसके पति बेटे को अलग घर लेकर रहने का दो टूक फैसला न सुना देते.

बहू अलग रहने चली गई. भला नाखून मांस से जुदा हो सकता है. मां का प्यार बेटे बहू पर पूर्ववत बना रहा. पोते पोती आ गए तो लगाव और भी बढ़ गया. दादी पोती में एक गहरी दोस्ती का जज़्बा था जो बहू की कुटिलता सहन नहीं कर पाती. नन्हीं सी आशा को वह हर समय दादी के खिलाफ भड़काती जरूरत भर को मिलने देती. जरुरी था अलगाव सांस को मानसिक यंत्राणा देने के लिए.

सयानी मां की सयानी बेटी जब भी पैसा खर्च करने की बात आती झट सास को मान देकर बड़ा बना देती. जाहं लेने की बात होती सांस का अस्तित्व ही नकार देती.

बहू अब अपने बेटे के लिए बहू की खोजबीन में लगी है. रोज पूजा पाठ को ढ़ोग करती वह डर कर भगवान से यही प्रार्थना करती है 'हे भगवान मेरे घर में मेरी जैसी सयानी मां की कोई सयानी बेटी न आ जाए.

# क्यों होता है, ऐसा?

✍कु0 सरिता

म से 'मछली जल की रानी है' पढ़ने की उम्र में आज वो मासूम म से मौत पढ़ रहा है. जूनियर के.जी. का नन्हा सा छात्र जिसकी उम्र करीब 4.5 वर्ष होगी आज अपनी मौत को करीब आते देख रहा है. अभी उसकी उम्र ही कितनी थी, अभी उसने कितनी दुनिया देखी थी जो उसे इस दुनिया को छोड़ जाना पड़ रहा है. वो नहीं जानता है कि वह सिर्फ चार से छः दिन ही इस दुनिया में अपने मम्मी–पापा के पास रहेगा, लेकिन फिर भी वह रो रहा है कि अगले हफ्ते शुरू होने वाली परीक्षा तक शायद वो न ठीक न हो सके. क से कबूतर उसने पढ़ा था आज क से 'कैंसर उसके कानों में सुनाई पड़ रहा है. फिर भी वो इस भयंकर बीमारी से अनभिज्ञ है. उसे अभी इस कैंसर की भयंकरता के बारे में नहीं मालूम. अभी उसके खेलने–कूदने की उम्र थी, अभी तो उसने अपने घर और स्कूल के आगे कदम भी नहीं बढ़ाया था कि आज उसे अपनी मौत की ओर कदम बढ़ाना पड़ रहा है. मौत से संघर्ष कर रहे इस मासूम से होनहार बालक का नाम 'रजत' है जो अपने नाम के अनुसार ही गुण भी रखता है. आज उसे अपनी मौत का इंतजार होने के साथ–साथ परीक्षा की भी चिन्ता सता रही है. मॉ–बाप का लाडला आज उन्हीं से विछड़ने की तैयारी कर रहा है और वो भी हमेशा के लिए. क्या उसने कभी सोचा भी था कि कभी उसमें बोलने की भी हिम्मत नहीं रहेगी? नहीं, उसने तो अपनी नन्हीं–नन्हीं ऑखों से एक सपना देखा होगा, जो बिल्कुल उसी की तरह मासूम सा था लेकिन आज उसका वो मासूम सा सपना टूट गया है, कहीं खो चुका है. आज वो मासूम चुपचाप (उसकी आवाज भी खत्म हो गयी है.) टकटकी लगाए बिस्तर पर लेटे–लेटे छत निहार रहा है. मॉ–बाप भी लाचार हैं वो हर तरह से कोशिश कर रहे हैं कि उनका लड़का उन्हें छोड़कर न जाए. मां परेशान है बेटे की विदाई को सोचकर तो पिता मजबूर है बेटे को विदा करने के लिए. लेकिन वे रजत परेशान है कि उसे अपने माता–पिता, भाई और छोटी बहन के साथ–2 अपने दोस्तों से दूर जाना है. क्योंकि उसे भी आभास हो चुका है कि वो मौत के करीब है. मोत अभी आयी कि तब आयी कि कब आयी...

# आपके सपनों का महल "लगन"

कपड़ो की दुनिया में एक अलग पहचान रखने वाले विशाल शो रूम लगन कलेक्शन का विश्वास इन दिनों ग्राहकों के दिलों में बस गया है. आपके सपनों का महल "लगन" अब नये अन्दाज में शहरवासियों की सेवा में लगा हुआ है. मशहूर मिलों के क्वालिटी के फेब्रिक्स, रेमण्ड, रीड एण्ड टेलर, विमल ग्रेसिम की गरिमा को चार चाँद लगा रहा है. त्योहार पर खास किस्म की वेरायटी काटन वस्त्रों से लोगो की निगाहों का मरहम बनी हुयी है. वाजिब दाम पर अच्छी क्वालिटी के कपड़े परोस कर "लगन" ने जिस प्रकार से अपना खास मुकाम बनाया है. वह आपके लिए सवक है. प्रत्येक घरों में आप में बड़ी बात है, ग्राहकों की चाहत पर सदैव खरा उतर कर लगन कलेक्शन ने यह साबित कर दिया कि यह ही कपड़ो के चाहने वालो कं सपनों का महल है. जिसमें हर कोई बिना हिचक आना चाहेगा, आपने अनूठे अंदाज में शो रूम के मालिक ने ग्राहकों को ग्राहक न समझकर जो व्यावहारिकता का परिचय दिया है. उस कारण यह शो रुम कम समय में ही सिविल लाईन्स का दिल बन गया, जिन लोगों ने फिलहाल इस शो रुम से नहीं ली वह बाद में न पछताये इसलिए स्वागत है, आप तत्काल आयें. लगन कलेक्शन, सेल्स टेक्स ऑफिस के नीचे, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

## बेरोजगारों का हमसफर एम.टेक.कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर

आज के इस बेरोजगारी के दौर में सामान्य शिक्षा का कोई महत्व नही रह गया है. आज का समाज अर्थ प्रधान हो गया है. ऐसे में जरुरी है सामान्य शिक्षा के साथ ही तकनिकि शिक्षा की भी जिससे अर्थापार्जन के रास्तें बने रहे. वरना एम.ए., एम. एस.सी, एम,काम. करके घर बैठे रहेंगे. आज बिना अर्थ के कोई पूछ नहीं है. आज प्रत्येक नौकरी में, ऑफिस में चाहे मेडिकल, इंजिनियरिंग हो या कोई भी क्षेत्र प्रत्येक जगह कम्प्यूटर एजुकेशन जरूरी है. ऐसे में जरूरी है कि कम्प्यूटर शिक्षा क्यों न अपने सामान्य शिक्षा काल में ग्रहण कर लिया जाए. अगर आपको नौकरी नहीं मिलती है तो यह आपके रोजगार के काम भी आयेगा. इसमें पब्लिशिंग कार्य, एकाउण्ट के ऐसे कार्य हैं जिससे अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है. लेकिन जरूरी है कि इसके लिए किसी ऐसे संस्थान को चुना जाए जो व्यवहारिक शिक्षा दे. वर्ष 96 से लगातार समाज सेवा में कार्यरत जी.पी.एफ.सोसायटी द्वारा संचालित यह संस्थान दस साल, 15 साल के अनुभवी, जाब कार्य में लिप्त इंस्ट्रक्टरों द्वारा संचालित हो रहा है. यहॉ महिलाओं के लिए पेंटिग, सिलाई, कढ़ाई खिलौना बनाना इत्यादि रोजगार परक कोर्स भी चलाये जाते है. आइये एक बार इस संस्थान को मौका दे.

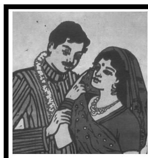

**गुप्त रोगों का कामयाब इलाज**

अगर आप किसी कारणबश किसी भी प्रकार के गुप्त रोग से परेशान हैं जगह–जगह इलाज के बाद सफलता न मिली हो तो शर्तिया इलाज हेतु आज ही मिलें।

परामर्श शुल्क 100/–दवा खर्च अतिरिक्त

**समयः** प्रातः 9 से रात्रि 8 बजे
**रविवारः** प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक

**नोटः** हमारी उत्तर भारत में कोई शाखा नहीं है।

**न्यू हेल्थ क्लीनिक**

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा0 झा के ठीक सामने) घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद फोनः 0532–2401958

# उचित इलाज से गुप्त रोग का निदान सम्भव

युनानी पद्धति द्वारा सफल एवं उत्तम चिकित्सा सुविधा–आधुनिक फैशन के दौर में जिन्दगी की भागदौड़ के पश्चात् रहन–सहन एवं खान–पान के कारण जहां व्यक्ति के सही स्वास्थ्य पर वातावरण के कारण प्रश्नचिन्ह लगता जा रहा है, शाम होते ही शांति की खोज की व्यवस्था के रुप में तमाम नशे–बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू तथा शराब आदि नशे के कारण व्यक्तियों को सोचने की सामर्थ्य को कम करे देती है। अपने अन्दर पहले से ही अपनी सामर्थ्य कमी के कारण गुप्त रोगों से ग्रसित होकर नपुंसकता की ओर निरन्तर अग्रसर हो जाता है। ऐसे समय में सही तथा अनुभवी डॉक्टर का परामर्श तथा सही चिकित्सा एवं मशहूर गुप्त रोग विशेषज्ञ डॉ0 एम.आर.शाही ने बताया कि जिसे घर, पत्नी, दोस्तों से गुप्त रखा जाये वहीं गुप्त रोग है. आधुनिकतम तथा मौज मस्ती की इस जिन्दगी में कई अत्यन्त घातक गुप्त रोग तथा जानलेवा बीमारियॉ हो जाती हैत्र. थानान्तरित रोगों में बी.डी. सिफलिस, गौनौरिया जैसी घातक तथा एड्स जैसी जानलेवा बीमारी असुरक्षित यौन संबंधो से हो जाती है. एड्स तब होता है जब शरीर की रोग प्रतिरोधक प्रणाली नष्ट हो चुकी होती है. जिससे संक्रमण रोगों की चपेट में चला जाता है. जब संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित शारीरिक सम्पर्क किया जाता है तब मुख्यतः संक्रमित रक्त दूषित सुईयों से मॉ के द्वारा बच्चे को फैलता है. थकान महसूस होना, अकस्मात वजन का घटना, लगातार दस्त, लम्बे समय तक बुखार तथा लसिका ग्रंथियों के आकार का बढ़ जाना प्रमुख लक्षणों में है. इससे बचने के लिए मुख्य रूप से अपने यौन साथी से वफादारी, सुरक्षित यौन क्रिया में कन्डोम का प्रयोग आवश्यक है. रोगाणु मुक्त सुई एवं सिरिजों तथा रक्त का प्रयोग करने एच.आई.वी. परीक्षण आवश्यक है. इस इलाज के रुप में अब तक ठोस सफलता चिकित्सा जगत को नहीं मिल पाई है क्योंकि एच.आई.बी. विषाणु अपनी संरचना आसानी से बदल देता है जिससे यह संभव नहीं हो पाया तथा कुछ अत्यधिक मंहगी दवाइयों के प्रयोग से एड्स रोगी की उम्र साल–दो साल बढ़ायी जा सकती है. ऐसे में मरीज दिग्भ्रमित हो जाता है किन्तु बाद में वह हम लोगों के पास अवश्य आता है. धैर्य के साथ सही समय में सही इलाज करा लें. कृत्रिम आनन्दों, अश्लील दृश्यों एवं साहित्य से बचकर नशीली गोलियां जो पुरुष शक्ति को बढ़ाने का दावा करती है, हमेशा अपने को बचाना चाहिए तथा ऐसे डिस्पेंसरियों के प्रोपागण्डों से भी बचाना चाहिए. उत्तम चिकित्सा तथा सही डाक्टर के इलाज से गुप्त रोग शत प्रतिशत ठीक हो जाता है. गुप्त रोग जानलेवा तो नहीं लेकिन कष्टकारी अवश्य है. पूर्णतया इलाज में मरीज के साहस की जरुरत पड़ती है. सुखी दाम्पत्य जीवन हो सही हमारा मुख्य लक्ष्य है।

डॉ0 एम.आर.शाही
निदेशक, न्यू हेल्थ क्लिनिक,
घंटाघर, इलाहाबाद

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में
खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम
स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट

THE REVISIT SHOP
टंलउवदक
मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे
सिविल लाईन्स, इलाहाबाद फोन : 2608082

## पाठकों से निवेदन

इलाहाबाद के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक रुप से इतना इतना विशाल हृदय है कि इसके बारे में एक बार में या एक अंक में समेटा नही जा सकता है. यह अंक में आगे भी जारी रखेंगे. आप अपना सहयोग बनायें रक्खें. हम अपने अगले अंक में इलाहाबाद हाईकोर्ट, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, ई.सी.सी. कॉलेज के गौरवमयी इतिहास सहित तमाम जॉनकारियॉ आपको उपलब्ध करायेंगे. आप हमारा विज्ञापन से सहयोग देकर मनोबल बढ़ाये. हम आपके सहयोग से ही चलते है.

# १९२५ का अंध विद्यालय सरकारी उपेक्षा का शिकार

जी.के.द्विवेदी

अन्धा खाना के नाम से आमजन में जाना जाने वाला इलाहाबाद का सबसे प्राचीन नेत्राहीन विद्यालय एवं शरणालय आज भी बिना किसी सरकारी फंड या किसी धनाढ्य वर्ग के सहयोग के अपने उद्देश्य को भलीभॉति पूर्ण कर रहा है.

द स्कूल एण्ड होम फॉर द ब्लाइन्ड जो कि गउघाट यमुना पुल के आगे, गंगा प्रदुषण नियत्रांण ईकाई के समीप नये यमुना ब्रीज के कार्यालय के पास स्थित है की नींव 1854 ईसवी में शहर के सभ्रान्त नागरिकों द्वारा अमेरिकी मिशनरी के सहयोग से रक्खी गई थी. इस संस्थान का उद्देश्य समाज के उपेक्षित दबे—कुचले वर्ग की सहायता करना था. इस संस्थान के समर्पित एवं उद्देश्य पूर्ण कार्य को देखते हुए तत्कालिक ब्रिटिश सरकार ने संस्थान को जमुनापार मिर्जापुर रोड पर भूमि प्रदान की एवं प्रिस्बिटेरियन चर्च ऑफ यू. एस.ए. के मुख्य भाग के रूप में इसकी स्थापना की. चर्च की देखरेख में इस चर्च के पास्टर ने हिमबॉटम साहब को मिशन की तरफ से अगुवा नियुक्त किया. जिससे अमेरिका एवं अन्य बाहरी चर्चो से भी सहायता प्रदान की जा सके.

1925 में प्रिस्बिटेरियन चर्च और यू. एस.ए. के मुख्य भाग के रूप में अन्धा खाना की स्थापना हुई. यहां नेत्राहीनों को शरण दी जाने लगी. 1926—27 में विद्यालय की स्थापना की गई ताकि नेत्राहीन बालकों का जीवन स्तर शिक्षा के माध्यम से उच्च बनाया जा सके. इस ब्लाइन्ड मिश्नरीज में मुख्यतः स्व0ब्रुक्स, मि. हेस्टिंग्स, मि. क्लार्क, मि. वॉशिंग्टन एवं मि. सैम थे. जिन्होंने अलग—अलग रूप से संस्थानिक कार्यो को सम्भाला.

स्वर्गीय एच.एफ. वॉशिग्टन ने ब्रेल शिक्षा के माध्यम से बालकों को शिक्षित करना प्रारम्भ किया.

प्रारम्भ से ही इस संस्थान की स्वतन्त्रा कमेटी रही जो कि पूर्णतयाः समर्पित रूप से बालको की सेवा शिक्षा एवं भरण—पोषण का कार्य सम्भालती रही. परन्तु स्वतन्त्रा भारत के बॅटवारें के उपरान्त देश की उथल—पुथल के प्रभाव से ये संस्थान धीरे—धीरे सरकारी उपेक्षा का शिकार होता चला गया. इस आर्थिक तंगी के दौर में भी स्व. वॉशिग्टन साहब ने जो कि विद्यालय के प्रथम प्रधानाचार्य थे. अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर करते हुए इस संस्थान को संचालित रखा और पुनः शहर के सम्भ्रान्त वर्ग को एकजुट कर इस मिशन को कायम रखा. 1925 से आज तक यह संस्थान नेत्राहीन व्यक्तियों की सहायता एवं उनको शिक्षण, प्रशिक्षण, निवास बिना किसी भेद—भाव के मुहैया कराता आ रहा है.

समय समय पर इसके संचालन को चन्द सफेद पोशों द्वारा की जाती रही है. परन्तु आज भी यह संस्थान बिना किसी सरकारी एवं गैर सरकारी सहयोग के अपने उद्देश्य को पूर्ण कर रहा है.

इसका संचालन स्व. एच.एफ.वॉशिग्टन की नातिन श्रीमती सोशन एलिजाबेथ द्वारा किया जा रहा है. इनके कार्यो कों चन्द सफेद पोश व्यक्तियों द्वारा बार—बार अवरूद्ध करने का प्रयास किया जाता रहा है. इन सफेद पोशो की निगाह संस्थान की मुख्य सड़क पर स्थित भूमि पर है. परन्तु द स्कूल एण्ड होम फॉर द ब्लाइन्ड की जनरल सेक्रेटरी/सुपरिडेन्ट का कहना है कि यह कार्य हमें ईश्वर की ओर से सौंपा गया है. ये एक ऐसा कार्य है जिसको कोई शैतानी ताकत बाधित नहीं कर सकती है. जिस प्रकार मेरे नाना जी ने इस ब्लाइन्ड मिशन को पूर्णतया समर्पित थे. उसी तरह हमारा जीवन भी इस मिशन के लिए समर्पित है. अतः कोई ताकत हमारे इरादों को डिगा नहीं सकती.

संस्थान की संचालिका
श्रीमती सोशन एलिजाबेथ

यहां के पूर्व में शिक्षित विद्यार्थी आज सरकारी एवं गैर सरकारी महकमों में कार्यरत है और आज भी हम अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ—साथ रोजगार परक प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बना रहे हैं.हमें यकीन है कि हमारे विद्यार्थी हर वह कार्य कर सकते हैं जो एक नेत्रावान कर सकता है और उन्होंने इसे साबित भी किया है. जो बालक एक समय उपेक्षित जीवन व्यतीत कर रहे थे वे आज सम्मान के साथ जी रहे है. कुर्सी बुनाई, मोमबत्ती, अगरबत्ती, क्ले मॉडलिंग आदि की ट्रेनिंग भी प्रदान की जा रही है. इसके माध्यम से हमारे शिक्षार्थी आत्मनिर्भर हो रहे है और हमें आत्मिक सुख मिल रहा है.

# हमारे शरीर के संरक्षक एवं पोषक (बिटामीन वर्ग)

डॉ. कुसुम लता मिश्रा
चिकित्सिका, एक्यूप्रेशर एवं एक्यूपंचर

'दोस्तों जब भी हम बीमार पड़ते हैं तो समझ ही नहीं पाते कि हमें क्या हुआ. हम अच्छे खासे होकर एकाएक क्यों विस्तर पकड़ लिये, क्यों हमारे दांत, त्वचा या पेट बीमार हो जाते है. कभी हमारी ऑखे कमजोर हो जाती है तो कभी हम चश्मा शैशव काल में ही लगा लेते है. आखिर क्यों? क्या इसकी तह में आप कभी गये नहीं तो आइये हम अपनी शक्ति और सेहत का राज विटामिन में तलाशें क्योकि ये विटामिन ही हमारे शरीर एवं स्वाथ्य के लिये महत्वपूर्ण घटक है.'

विटामिन की कई श्रेणियों की खोज हो चुकी है जिसमें विटामिन बी की संख्या 14 या इससे से भी अधिक है. ये सभी जल में घुलनशील होते है. इसलिये ये शरीर में संचित नहीं रहते. इनको आवश्यकतानुसार प्रतिदिन ग्रहण करना पड़ता है. इनके कैपसूल विटामिन बी1, बी2, बी3,बी4, बी5,बी6, और बी12 के नाम से आते है. ये शरीर में कमजोरी होने पर दिया जाता है. ये शरीर और मष्तिष्क को शक्ति प्रदान करते है.

किन्तु ध्यान रहे यदि हम निम्न निर्देशित अन्न, सांग, दाल एवं दुग्ध उत्पाद का समुचित सेवन करें तो स्वास्थ्य, धन एवं तनाव सभी से बचकर आंनद पूर्वक जीवन बीता सकते है. क्योंकि ये बिटामीन ही हमारे शरीर कें कार्यप्रणाली में समस्त व्यवस्थापक के रुप में कार्यशील है.

बिटामीन बी1.–इसका मुख्य कार्य तंत्रिका तंत्रा (नसों) के कार्य को सुचारु बनाये रखना और शरीर की ऊर्जा में बढ़ोत्तरी करना है. यह हृदय, लीवर, पाचक इंन्द्रियों को शक्ति प्रदाना करता है. इसके मुख्य स्रोत–गेहूं के अंकुर, चोकर, चावल के कन, छिलके समेत आलू, पालक, गाजर, पपीता, सोयाबीन,फलिया मटर, सूखी मटर, मंसूर, अखरोट, शलजम, फूलगोभी, पके सूखे बेर, चुकन्दर, किशमिस शकरकंद अरहर, चौराई, पुदिना, कद्दू, सेब, हरा चना, ताल मखाना, ताजी ताड़ी, मूली के पत्ते, मेंथी का साग, करी पत्ता और दूध में पर्याप्त मात्राा में पाया जाता है.

आवश्यकता– एक सामान्य व्यक्ति को उसे 4 मिली ग्राम, किंतु गर्भवती एवं दूध पिलाने वाली माताओं एवं बच्चों को 5 से 7 मिलीग्राम पर्याप्त होता है.

कमी या अधिकता से हानि– इसकी कमी से स्नायविक पीड़ा, पक्षाघात, दुर्बलता, ग्रन्थियों पेशियों में कड़ापन, अकड़न, ऐठन, वजन घटना, भूख में कमी, सीमित शारीरिक विकास, अवसाद, थकावट, चिड़चिड़ापन, एकाग्रता में कमी, मधुमेह रोग, क्लोम ग्रन्थि की वृद्धि, कार्वोज तत्वों का आत्म सात होना, बाल झड़ना, माताओं में दूध न होना. ध्यान रहे यह विटामिन अधिक चीनी, पान, तम्बाकू, शराब के सेवन से नष्ट होता है. इस खाद्य को पकाने से इसका सारा तत्व पानी में चला जाता है. अतः सब्जियों का सूप, चावल का माड़ नहीं फेंकना चाहिए.

इसकी अधिकता प्रायः नहीं होती क्योंकि अधिक होने पर यह स्वतः मूत्रा द्वारा निकल जाता है.

विटामिन बी2– यह गर्मी में ठहरने वाला तथा पकाने में कम नष्ट होने वाला होता है. इस भोज्य

# स्वास्थ्य समस्याए

डॉ.श्रीमती पी. दूबे

**प्रश्नः मैं 25 वर्षीय अविवाहित युवती हूँ. पिछले 1.5–2 सालसे हस्तमैथुन करने के कारण मेरा स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है. शरीर जैसे सूखता जा रहा है, गाल अंदर धंस गए है, चेहरे की रौनक लुप्त हो गई है जननांग भी सूख गए हैं और मैं समझ नहीं पा रही कि ऐसे में क्या करूं? मातापिता विवाह के लिए जोर दे रहे हैं लेकिन ऐसे में उन्हें क्या कहूं? क्या मुझे कुछ जांच कराने की जरूरत है?**

**उत्तर:** आप एकाएक इतनी सारी शंकाओं के चक्रव्यूह में कैसे फंस गई यह आप के पत्र से स्पष्ट नहीं है लेकिन जिस ने भी आपको यह बताया है कि हस्तमैथुन स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है. वह स्वयं सचाई नहीं जानता. हस्तमैथुन न तो कोई अप्राकृतिक क्रिया है नही किसी रूप में अस्वास्थ्यकारी कि उससे शरीर दुर्बल हो. आप अनावश्यक ही अपने मन में इसे लेकर शंकाए पाल बैठी है. इस स्थिति से उबरिए. जीवन में कुछ रचनात्मक कीजिए जिससे जीवन में सुखसंतोष के सुर मुखरित हों. मातापिता विवाह के लिए कह रहे तो उसमें भी कोई हर्ज नहीं. किसी प्रकार के डाक्टरी जांच परीक्षण कराने से कोई लाभ नहीं होना वाला. आपको सिर्फ अपने ही द्वारा बुने शंकाओं के जाल से मुक्ह होने की जरूरत है और मन को चंगा रखने के लिए कुछ ऐसा करने की जिस से आप फिर से आशावादी रूप से सोचने के काबिल हो सकें

**प्रश्नः मैं 56 वर्ष की हूं कद 5 फुट 3 इंच है और वजन 69 किलो है. स्वस्थ हूँ, स्फूर्त हूँ और अपने छोटों के मुकाबले आज भी अधिक काम करने की स्टेमिना रखती हूं. पर मुझे मीठे का बेहद शौक है. दिन में 5 बार तो चाय पी ही लेती हूं. वह भी मीठी. सभी टोकते हैं इतनी चीनी ठीक नहीं. आप की क्या सलाह है?**

**उत्तर:** आपका वजन उम्र और लंबाई के हिसाब से ५४ से ५८ किलो के बीच होना चाहिए था. यह ६९ किलो है, जो सामान्य से लगभग २० प्रतिशत अधिक है. इसे कम कर सकें तो सेहत के लिए अच्छा होगा. अभी आपकी सेहत अच्छी है, आगे भी ऐसी ही बनी रहे इसके लिए वजन कम करने से लाभ होगा. उस दृष्टि से न सिर्फ मीठा, चीनी और तली हुई चीजों पर रोकटोक रखनी होगी. शरीर का वजन १ किलो कम करने के लिए १५ दिन पर ९००० कैलारी खर्च करनी होगी तब कहीं महीने में २ किलो वजन कम हो सकेगा. किसी डाइटीशियन की मदद से डाइट चार्ट तैयार करा लें और उसका अनुसरण करें.

इस स्तंभ के लिए पाठक अपनी समस्याएं भेजते समय डाक्टरी परीक्षण, केस हिस्टरी व अन्य आवश्यक ब्योरा दें. समस्याओं के हल केवल पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे. पत्र इस पते पर भेजें: स्वास्थ्य समस्याएं, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

में सोडा डालने से भी नष्ट हो जाता है.

उपयोगिता– त्वचा, ऑख, नाखूनों को स्वस्थ रखने में समर्थ होता है किन्तु एंटी बायोटिक दवाओं के प्रयोग से बड़ी ऑत प्रभावित होती है. जहॉ ये विटामिन बनते हैं. जो लोग अधिक वसा का प्रयोग करते है उनके लिए यह आवश्यक है. इसके भी स्रोत विटामिन बी1 के स्रोत है.

छेने का पानी, ऑवला, कच्चा केला, सूखा कटहल, सहजन, अंकुरित अन्न, मट्ठा एवं पनीर में पाया जाता है.

विटामीन बी3– यह छिलके सहित अन्न, दालों, मांस में विशेष रुप से पाया जाता है.

दैनिक आवश्यकता इसकी 15 मिलीग्राम होती है. इसकी अधिकता से प्रायः खुजली, सुन्नपन, जलन एवं चुभन सा प्रतीत होता है.

इसकी कमी से विटामिन बी1 की हॉनिया ही होती है. मुंह के कोने में घाव, होठो पर लाल चकते, जीभ में घाव एवं पैरों में कम्पन हो सकता है.

विटामिन बी 5– शारीरिक मानसिक दबावों से बचाने वाला, कार्बोज, चिकनाई और प्रोटीन के चयापचय में सहायक, रक्त एवं हीमोग्लोबिन के निर्माण में सहायक होता है. एन्डिनल ग्रंथि को प्रोत्साहित करता है. बीमारी के बाद शीघ्र स्वास्थ्य लाभ में सहायक होता है. असामयिक बुढ़ापा रोकता है. बालों का झड़ना, त्वचा का स्वास्थ्य बनाये रखने में सहयोगी है. गठिया, बात रोग आदि में लाभकर है.

मशरुम, सोयाबीन, सूरजमुखी, चावल में यह पाया जाता है. वयस्कों को 10 मिलीग्राम तथा बच्चों को 5 मिलीग्राम की आवश्यकता होती है.

इसकी कमी से सदैव थकावट बनी रहती है. आसानी से संक्रमण फैलता है. अवसाद, निम्नरक्त चाप, शुगर, चर्मरोग, पैरो में दर्द आदि रोग हो सकते है.

विटामिन बी 6– यह रक्त की लाल कोशिकाओं के उत्पत्ति में सहायक होता है. कार्बोज वसा, प्रोटीन को शरीर में आत्म सात करता है. त्वचा को चिकना स्नायुतंत्रा को तनाव रहित रखता है. इसमें मुख्य स्रोत–सोयाबीन, केला, सभी हरी सब्जियों में यह पाया जाता है.

कमी से दंत क्षय, मुंह में दुर्गन्ध, गुर्दे में पथरी, अनिद्रा, सिरदर्द, पेनक्रियाज क्षतिग्रस्त हो सकते है. अधिकता से रात में उलझन, तनाव, योनि से रक्तस्राव आदि हो सकते है.

विटामीन बी8–इसकी अत्यल्प मात्राा की आवश्यकता होती है. यह विटामिन गर्म पानी में घुलनशील होता है. सल्फा दवायें, खाद्य प्रशस्करण, मद्यपान तथा अण्डे की सफेदी अधिक लेने से नष्ट हो जाता है.

यह विटामिन पर्याप्त जीवनी शक्ति के लिए आवश्यक है. कार्बोज, प्रोटीन और चिकनाई के चयापचय के लिए उपयोगी है.

यह ईस्ट, चावल की भूसी, जौ, जई, फूल गोभी आदि में पाया जाता है.

प्रतिदिन इसकी आवश्यकता वयस्कों के लिए 100 से 200 मिलीग्राम, बच्चों को 50 मिग्रा, अबोध्ा बच्चों को 30 से 50 मिग्रा आवश्यक होता है.

इसकी कमी से अपरस, रुसी, हृदयरोग, फेफड़ो के रोग, रक्तलपता आदि होते है.

विटामीन बी9– यह भी सल्फा दवाओं के प्रयोग से धूप में रखने से नष्ट होता है. यह विटामिन बी 12 के साथ मिलकर लाल रक्त कणों को निर्माण करता है. यह शरीर में कोशाणुओं को विशेषकर स्नायुतंत्रा की कोशिकाओं के निर्माण में सहायक है, पैत्रिकता के निर्माण में सहायक है. वृद्धि और मरम्मत में सहायक है.

मुख्य स्रोत– बड़ी मटर, काबुली चना, मक्का, ज्वार, बाजरा, काला चना, नारियल, अण्डा, इसकी कमी से रक्तल्पता, मल के अत्यधिक चिकनाई बार–बार गर्भपात, बच्चों में मानसिक विकांलगता, शरीर पर भूरे चकते हो जाते है. इसकी अधिकता से कोई हानि नहीं होती. केवल मिर्गी के रोगी को इसकी अधिकता से बचाना चाहिए.

विटामीन बी12– तंत्रिका उतकों को स्वस्थ रखने तथा लाल रक्त कणों को बनाने में प्रमुख सहायक होता है. यह रक्त वाहिनियों के रोग, मानसिक रोग, मुखपाक, दमा, कैंसर में लाभकर है.

यह मखानिया दूध, पूर्ण दूध, पनीर दही, कलेजी, अण्डा एवं मछली में पाया जाता है.

इसकी दैनिक आवश्यकता एक व्यक्ति के लिए 1. 5 मिग्रा0 बढ़ते बच्चों को गर्भवती स्त्रियों दूध पिलाती माताओं और बीमारी से उठे व्यक्तियों के लिए इसकी आवश्यकता अधिक पड़ती है. सोडियम उच्च प्रोटीन वाल पदार्थ इस विटामिन के पाचन में सहायक है.

इसकी कमी से संज्ञा सुन्यता, भुजाओं में कड़ापन तथा आंशिक पक्षाघात हो सकता है. इसकी अध्िाकता से किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं होती है


**शीघ्र प्रकाश्य** **शीघ्र प्रकाश्य**

# सुप्रभात

कवि एवं उनकी कवितांए (भाग 1)

*नवोदित कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।*

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

## अथवा

**एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर**, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, (झलवा) इलाहाबाद, मो0 : 0532–3155949

# माह अप्रैल के व्रत, त्योहार एवं साईत

✍ पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

**21.3 :** चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ.

**संकल्प मंत्र**—हरि ॐ विष्णुविष्णुर्विष्णुः श्रीमद भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रज्ञर्तमानस्य, अद्य श्री ब्रहमणो द्वितीये परार्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, मूर्लोकि, जम्बू द्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तैक देशान्तगर्ते, श्री हेमलम्ब, नाम सम्वत सरे, अमुकायने महामंगल प्रदे, अमुक अमुक राशि रवि, चन्द्र, सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, राहु, केतु स्कितेषु अमुष मीन राशि स्थितेषु चद्रेषु उचरत भाद्रपत नक्षत्रें चन्द्रसम्वतसर वासन्त नवरात्रस्य मध्ये अमुक(प्रयाग क्षेत्रे), तदुपरि (अमुक—मोहल्ले का नाम), क्षेत्रे, मासानाम मासोत्ये मासे, अमुक शुक्ल पक्षे, प्रतिपदायाम् तिथौ, रविवासरे, शुभ योगे, शुभ चरणे, शुभ पुण्य तिथौ, एकल शास्त्र स्मृत, पुराणों फल प्राप्त कामः गोत्रोत्पन्न, नामाःसत्प्रवृति संवर्धनाय, दुष्प्रवृति, उन्मूलनाय, लोक कल्याणाय—आत्मकल्याण वातावरण परिष्काराय, उज्जवल भविष्य कामनापूर्तये च प्रबल पुरूषार्थ करिष्ये, मन वान्छित फल प्राप्तयर्थम्, अस्मै प्रयोजनाय च, कलशादि आवाहित देवता पूजनपूर्वकम् अमुक कर्म सम्पादनार्थ संकल्पम् अहं करिष्ये.

**23.3 :** तृतीय, श्री झूले लाल जयन्ती, सवार्थसिद्धियोग रात्रि 12.59 तक.

**24.3:** चतुर्थी, भद्रा सायं 6.27 से, वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत.

**27.3:** षष्ठी, श्री सूर्यषष्ठी व्रत, सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग दिन में 8.00 बजे तक

**28.3:**सप्तमी, भद्रा दिन में 1.20 से रात्रि 2.17 तक

**29.3 :** अष्टमी, व्रत की अष्टमी, श्री दुर्गानवमी.

**30.3:** नवमी, श्रीराम नवमी. अयोध्यायाम. श्रीरामजन्मभूमि दर्शन

**31.3:**दसमी, नवरात्रि व्रतस्य पारण.

**1.4:** एकादशी, कामदा एकादशी व्रत.

**2.4 :** द्वादसी, प्रदोष व्रत

**4.4 :** चतुर्दशी, व्रताय पूर्णिमा, सभी कार्यो के लिए शुभ सायं 7.30 तक

**5.4:** पूर्णिमा, स्नानदान पूर्णिमा.

**6.4.:** एकम, पौसरा, जलकुम्भ, घट आदि दान, तुलसी पत्र द्वारा श्री विष्णु भगवान की पुजा

**8.4:** तृतीया, संकष्टी, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 7.21बजे, दिन में 3.20 के बाद सभी कार्यो के लिए शुभ

**12.4:** शीतला अष्टमी व्रत

**15.4:** एकादशी, बरूथिनी एकादशी व्रत, सभी के लिए

**16.4:** प्रदोश व्रत

**19.4:** स्नानदान की अमावस, पंचकसमाप्ति दिन 6.55 पर.सूर्यग्रहण.

**21.4:** चन्द्रदर्शन, छत्रपति शिवाजी जयन्ती. सभी कार्यो के लिए शुभ दिन में 10.24 से रात्रि 8.37 तक

22.4: अक्षय तृतीया, बद्रीकाश्रम केदार नाथ यात्रा, श्री परशुराम जयन्ती, सागर स्नान, जलकुम्भ, शर्करादि व्यन्जन छत्रादि दानम्.

23.4: वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत.

24.4: आद्य जगत् गुरु शंकराचार्य जयन्ती.

26.4: श्री गंगासप्तमी, गंगा पूजन.

1.5: मोहनी एकादशी व्रत.

2.5: एकादशी व्रत पारण, प्रदोष व्रत, उपनयन संस्कार मुहुर्त

3.5. श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रत. बधू प्रवेश, द्विरागमन मूहूर्त प्रातः 5.47 तक.

4.5: स्नानदान व्रतादि पूर्णिमा, श्री बुद्धपूर्णिमा जयन्ती, वैसाख व्रत नियम आदि समाप्ति. पूर्ण चन्द्रग्रहण, रात्रि 12.23 से 2.47 तक

## राशिफल माह अप्रैल 2004

**मेषः** आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल होगी, आय के नए स्रोत बनेंगे. जनसंपर्क बढ़ेगा. वैचारिक रुप से प्रखर होंगे. यात्रा भी करनी पड़ सकती है. जीवन में आगे बढ़ने की योजनाएं बनाएंगे.

**वृषः** रचनात्मक कार्यो में सफलता मिलेगी. शोधकर्ता विशेष सफलता पाएंगे. नियमित दिनचर्या होगी. बिगड़े काम बनेंगे. शिक्षा—परीक्षा में सफलता मिलेगी. भावी योजनाओं को पूरा करने का यही उपयुक्त समय है. आगे बढ़िए, लक्ष्य आपका इंतजार कर रहा है.

**मिथुनः** विवादित मामलों में सफलता मिलेगी. उच्च वर्ग का सहयोग मिलेगा. शुभ समाचार की प्राप्ति होगी.श्रम व धैर्य से बिगड़े काम बनेगें. ध्यान—योग आदि का अवलंबन आपके जीवन को नई दिशा देगा. आगे का मार्ग प्रशस्त करेगा. आप में आगे बढ़ने की इच्छा प्रबल होगी.

**कर्कः** कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा. पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करेंगे. अध्ययन—अध्ययवसाय में सफलता के योग हैं शुभ कार्य का संपादन होगा. नए रिश्ते जुड़ेगे. आपको जीवन में कोई निर्णय लेने में किसी का सहयोग जरुर लेना चाहिए.

**सिंहः**नवीन कार्य का शुभारंभ होगा. नियमित दिनचर्या रहेगी. धर्म के प्रति जागरूक रहेंगे. वैचारिक प्रखरता आएगी. बिगड़ा काम बनेगा, वाद—विवाद से बचें आगे बढ़े—मंजिल आपका रास्ता चूमेगी.

**कन्याः** पारिवारिक—भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी. दैनिक समस्याओं का समाधान होगा. इष्ट मित्रों का अनुकूल सहयोग मिलेगा. शैक्षिक कार्य में सफलता मिलेगी. कोई नई योजना को शुरू करने से पहले कई मर्तबा सोच ले, अन्यथा पछताना पड़ सकता है.

**तुलाः** भविष्य के लिए नई राह मिलेगी. नियमित दिनचर्या होगी. स्थान परिवर्तन के योग है. यात्रा शुभ एवं फलदायी होगी. पारिवारिकजनों को शारीरिक कष्ट रहेगा. आपने अपने जीवन को जैसे—जिस रुप में सोचा है, वैसे ही योग बनेंगे क्योंकि समय आपके अनुकूल बनने वाला है.

**वृश्चिकः** अतिथि समागम होगा. व्यापार को नया रुप देगें. इच्छित कार्य की पूर्ति होगी. कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा. श्रम का प्रतिफल मिलेगा. जनसंपर्क बढ़ेगा.

**धनुः** व्यक्तिगत संबंधो में सुधार. अतिथि समागम होगा. घरेलू कार्यो में समय देगें. शिक्षा में प्रगति के योग है. शुभ समाचार की प्राप्ति होगी, नया अनुबंध लाभप्रद हैं.

**मकरः** आर्थिक मामलों में संतुष्टि मिलेगी. विवादित मामलों में विलंब होगा, आय के क्षेत्र में प्रगति होगी, शुभ कार्य का संपादन संभव है.

**कुंभः** व्यक्ति विशेष का सान्निध्य प्राप्त होगा. प्रगति के अवसर मिलेगें. व्यक्तिगत संबंधो मे सुधार होगा. श्रम का प्रतिफल मिलेगा, यात्रा से वंछित लाभ.

**मीनः** आवश्यक दायित्व की पूर्ति में बाधाएं आ सकती है. अनियमित दिनचर्या, शिक्षा में व्यवधान. श्रम की अधिकता रहेगी. सामयिक कार्यो में विशेष रूचि, धर्म में रुचि बढ़ेगी.

# सोच–समझकर करें शुभ कार्यो का प्रारंभ

मां सरस्वती के वास प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर एक पल के लिए 24 घंटे में एक बार अवश्य होता है, ऐसी मान्यता है. उस समय में कोई भी व्यक्ति गलत सिद्ध नहीं होता. इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र में कुछ दैनिक उपयोग की बाते हैं, जिनका अनुसरण करने से अनिष्ट को टाला जा सकता है. आपने महसूस किया होगा कि कभी–कभी सब कुछ निर्धारित कर लेने के बाद भी अनदेखी व अनचाही रुकावटें सामने आ ही जाती है, जो कुछ घंटो के बाद ही समाप्त हो जाती है. नितांत अशुभ हो तो ये रुकावटें स्थायी भी हो जाती हैं. इसी कारण सूर्य आदि ग्रहों की दैनिक गति में अनिष्टकारी तत्वों की गणना करके, हमारे सिद्ध योगियों व ज्योतिष आचार्यो ने सरल तरीके से प्रत्येक वार के निश्चित समय में कोई भी शुभ कार्य करने की मनाही के निर्देश दिए हैं. इनका पालन करने से मानव का हित होता है. कार्यसिद्धि या सफलता में कम से कम विघटनकारी तत्वों का हाथ नहीं होता है. इसी संदर्भ में दो बातें मुख्य रुप से उपयोग में लाई जाती हैं–इनमें एक तो भद्रा विचार है दूसरा है 'राहु कालम'. भद्रा की स्थिति व राहू कालम प्रतिदिन अलग–अलग समय पर आता है. भद्रा का विचार दैनिक पंचाग में मिल जाता है, किंतु राहु कालम प्रत्येक वार में उसी समय में आता है, जो सप्ताह के गत वार में आया था.

भद्राकाल में पैदा हुआ जातक क्रूर, पापी और विष फैलाने में निपुण होता है. इसमें कई स्थितियॉ ऐसी होती हैं, जिनमें उत्पन्न बालक या व्यक्ति को विष–पुरूष या विष कन्या के नाम से जाना जाता है. रंक की तो क्या बात करें, राजा के घर में ऐसा जातक सब कुछ नष्ट करने वाला होता है. भद्रा की गणना किसी एक खास भाग में होती है. राहू काल प्रत्येक वार को एक निश्चित समय में होता है.

भारत के अलग–अलग प्रदेशों में यह समय काल अलग–अलग नामों से जाना जाता है–दक्षिण में राहूकाल, उत्तर में भद्रा, व चौघड़िया. चौघड़िया का उपयोग यात्रा आदि में बहुत होता है. भद्रा व राहुकाल में शुभ कार्य या अहम कार्य करना वर्जित है. नियमों की जटिलता में न जाते हुए, आपको केवल इतना जानना है कि इस काल मे कार्य कब–कब नहीं करना चाहिए. आपका कल्याण होगा इसका अनुसरण करने से.

भद्रा कब हावी होती है? कृष्णपक्ष की तृतीया, दशमी और शुक्लपक्ष की चतुर्थी व एकादशी में, उत्तरार्ध तथा कृष्णपक्ष की सप्तमी, चतुर्दशी और शुक्लपक्ष की अष्टमी व पूर्णिमा के पूर्वाध में भद्रा रहती है. इसका वास आकाश, पाताल या भूलोक में कहीं भी हो सकता है. आमतौर पर भद्रा के काल में कोई भी शुभ कार्य आरंभ करना वर्जित है, क्योंकि यह प्रयास सीधा काल के मुख में जाता है. यह समय और तिथि आप उपलब्ध दैनिक पंचांग से आसानी से जान सकते हैं. वरना भद्राकाल के कुछ अलग समय को छोड़कर आप बाकी का समय चुन सकते हैं, क्योंकि भद्रादोष्ज्ञ का परिहार काल भी उपलब्ध है. जैसे यदि भद्रा आकाश या पाताल में वास कर रही है तो पृथ्वी पर उसका प्रभाव नहीं आता, प्रतिकूल काल वाली भद्रा का समय हो, दिनार्ध के अनंतर वाली भद्रा हो या भद्रा का समय उसके पुच्छकाल में हो, अर्थात जब चंद्रमा, मेष, वृषभ, मिथुन या वृश्चिक राशि में चल रहा हो और भद्रा का काल हो तो मान लें उस समय भद्रा का वास स्वर्गलोक में है.

ऐसे में विवाह, लग्न, मुंडन, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, अनुबंधों पर हस्ताक्षर, यात्रा, पूजन–हवन आदि कार्य निषेध हैं. जब तक अति आवश्यक न हो, भद्राकाल का त्याग ही करना चाहिए. जरूरी हो तो ज्योतिषी से समय जानकर कार्य कर सकते हैं, क्योंकि पुच्छ में भद्रा का दोष नहीं लगता.

मुख में भद्रा हो तो कार्य का नाश होता है. नाभि में होने से कहल होती है. हृदय में होने से प्राणों का भय रहता है, कटि में होने से अर्थभ्रंश होता है केवल पुच्छ भाग में कार्य विजय होती है. अतः यह काल ज्योतिष के या फिर कर्मकांड के पंडित ही दैनिक पंचांग के अनुसार निकाल सकते हैं. वैसे भी कई बार रात्रि की भद्रा दिन में आ जाती है और दिन की भद्रा रात्रि में चली जाती है. तब और भी आवश्यक हो जाता है कि आप ज्योतिषी से सलाह लेकर ही अपने शुभ कार्य का श्रीगणेश करें.

प्रतिदिन 90 मिनट राहू हावी रहता है. अपनी दानवी ताकतों को साथ लेकर चलता है और सूर्य, चंद्र व मंगल ग्रहों के साथ कटटर शत्रुता होने के कारण इन दिनो में खासकर अपने काल में कार्य नष्ट कर देता है. बृहस्पति के साथ इसका रिश्ता सम रहता है. फिर भी अपनी मदवृत्ति में रहने से इसे भी नहीं छोड़ता. इसी तरह बुध, शुक्र व शनि को भी पकड़ लेता है.


मात्र २५/–पच्चीस रूपये में अपने लड़के/लड़की वैवाहिक विज्ञापन देकर शादी ढूढने की झंझट से मुक्त होइए

स्नेह मैरिज ब्यूरो

वर चाहिए

⊠उच्च कुलीन कुमाऊंनी ब्राहमण मांगलिक 27–1/2/5'–2'' एम.ए. बी. एड. कान्वेंट टीचर सुन्दर गोरी स्लिम कन्या हेतु उच्चा सेवारत सुयोग्य वर चाहिए. फोन– 09412034915,094122957764

⊠गुप्ता 30 वर्षीया विधवा पुत्रा ढ़ाई वर्ष का, बी.एस.सी. डिप. इलैक्ट्रानिक्स, आई. जी.डी., सेवारत इन्वर्टर कम्पनी, आय चार अंको में. निःसंतान, सेवारत व्यवसायी को वरीयता. सर्व वैश्य मान्य. महावीर सिंह राठी, शिक्षक नगर, सासनी, हाथरस,–204216

⊠तलाकशुदा मित्तल, 32/154/एम. ए., बी.एड. सुन्दर पारिवारिक कन्या हेतु सेवारत व्यवसायी वर चाहिए. जन्मपत्री बायोडाटा सपर्क–मिलन मैरिज ब्यूरो, सुल्तान टावर, रुड़की, 01332–265510, 9837075254

विस्तृत जानकारी के लिए लिखें :

स्नेह मैरिज ब्यूरो

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

## भारतीय महिला बनी अफ्रिका में पुलिस अफसर

जोहानेसबर्ग। भारतीय मूल की महिला विजयंतीमाला सिंह को दक्षिण अफ्रिका में पुलिस का उप राष्ट्रीय आयुक्त किया गया है। आजादी मिलने के बाद से आज तक दक्षिण अफ्रिका में किसी महिला को इतने अहम पुलिस पद पर आसीन होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ. उन्होनें न केवल भारतीय समुदाय बल्कि महिलाओं का भी मस्तक ऊँचा किया है।

1985 में ट्रांसवाल कॉलेज ऑफ एजूकेशन में बतौर लेक्चरर से अपने कैरियर की शुरूआत की थी. 1991 में उन्हें शिक्षा विभाग का सहायक अधीक्षक नियुक्त किया गया और दो बाद वे प्रिसींपल बन गई. 1999 में उन्हें दक्षिण अफ्रिकी पुलिस सेवा में डिवीजनल कमिश्नर के पद पर नियुक्त किया गया. विजयंती माला ने महज ढ़ाई साल पहले ही पुलिस सेवा के क्षेत्र में कदम रक्खा था.

## पहली सिगरेट बनाती है आदी

जब किशोर सिगरेट शुरू करते हैं, तो आमतौर पर यहीं तर्क देते है, ' एक से कुछ नहीं होता. हम कोई चेन स्मोकर नहीं है.' लेकिन अमेरिकी विज्ञानियों का कहना है कि पहली सिगरेट और यहां तक कि पहले कश से बच्चे नशेड़ी बनने लगते हैं. लड़कियॉ यदि हफ्ते में दो सिगरेट पीती हैं, तो तीन हफ्ते में और लड़के छह महीने में आदी हो जाते है. विज्ञानियें का कहना है कि बच्चों का दिमाग नशा अपनाने की दिशा में वयस्कों के मुकाबले कहीं तेजी से चलता है.

## सकारात्मक सोचने से उम्र बढ़ती है

**वाशिंगटन।** अमेरिका के एक अग्रणी विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि बुढ़ापे को लेकर नकारात्मक सो पैदा करने से इनसान की आयु में कई साल की कटौती हो जाती है. शोध में कहा गया है कि बुढ़ापे के बारे में सकारात्मक सोच रखने से इ न सा न अपेक्षाकृत अधिक जीता है. येल विश्वविद्यालय के इपीडेमियोलॉजी एंड पब्लिक हैल्थ विभाग द्वारा कराए गए एक शोध के मुताबिक सकारात्मक सोच वाले उम्रदराज व्यक्ति सामान्यतया उन लोगों की अपेक्षा 7.5 वर्ष अधिक जीते है, जिनकी सोच नकारात्मक होती है. शोधकर्ताओं का कहना है कि अधिक जीने के लिए इनसान को सकारात्मक सोच बेहतरीन सामाजिक–आर्थिक स्तर से भी अधिक महत्व रखता है.

## हवा में उड़ते नहीं, तैरते हैं सांप

शिकांगो. उड़ते हुए सांपो को भले ही आपने देखा न हो लेकिन इसके बारे में सुना अवश्य होगा. मगर क्या कभी आपने सोचा है कि ये सांप उड़ते कैसे हैं. अमेरिकी विज्ञानियों का कहना है कि पक्षी डैंनों के सहारे उड़ते हैं जबकि कुछ जानवर ग्लाइडर की तरह. उड़ने वाले सांप वास्तव में उड़ते नहीं है बल्कि हवा में तैरते है.

सिंगापुर में उड़ने वाले सांप पाए जाते है. इन सांपो पर अध्ययन के बाद विज्ञानियें का कहना है कि इन्हें पंख नहीं होते हैं. ये सांप हवा में 330 फुट की दूरी तक तैर सकते हैं और 90 डिगरी का तक दूसरी ओर मुड़ने में सक्षम हैं.

ये सांप पेट में हवा भरकर शरीर के अगले हिस्से को आगे की ओर उठाते हैं और ऐठते हुए पूरे शरीर को हवा में उछाल देते हैं. तब ऐसा लगता है कि ये पानी में तैर रहे हैं. उड़ते सम ये शरीर को चौरस बना लेते है और उसी वक्त पूरे शरीर को आगे की ओर धकेलते है.

## आज भी रहस्य हैं रुपकुंड के कंकाल

देहरादून. गढ़वाल की रुपकुंड झील पिछले कई दशकों से मानवशास्त्रियों के लिए अनसुलझी दासतां बनी हुई है. इस झील के आसपास कई सालों से पड़े मानव कंकाल और अवशेष सभी लोगों के लिए अनसुलझी पहेली हैं. यह अवशेष किन लोगों के हैं और इन्हें क्यों मारा गया, आज तक किसी को भी इस बातका पता नहीं लग पाया है. मानवशास्त्रियों का कहना है कि 1925 में पहली बार अधिकारिक तौर पर भारी संख्या में मौजूद मानव कंकालों का पता लगा था. यह कंकाल किन और कितने लोगों के हैं या वे कहां के रहने वाले थे, इस बारे में कोई भी बात आज तक सामने नहीं आई हैं.

## एड्स पीड़ितो के लिए शराब पीजिए, प्लीज!

'जिदंगी बचाने के लिए शराब पीजिए. ' यह स्लोगन इटली की एक धार्मिक संस्था और एक शराब कंपनी की है. दरअसल शराब की बिक्री से होने वाली आय में से एक हिस्सा मोजाबिंक के एड्स पीड़ितों के इलाज के लिए भेजने की योजना हैं. लिहाजा आप जमकर शराब का खरीदारी कीजिए.

इटली में शराब की कई बडी कंपनियों

और संत इजिडियो नामक धार्मिक समूह के अधिकारियों का कहना है कि अगर आप गरीबी और एड्स से जूझ रहे हैं लोगों की मदद करना चाहते है जमकर शराब पीजिए.

## गजब बालों को सीने से लगाने की होड़

मेड्रिड. महिलाओं के डिजाइनर जोस मॉनिनो हर डिजाइन तैयार करने की कोशिश में जुटी रहती हैं. हाल ही में उन्होंने इनसानी बालों का इस्तेमाल कर अद्भूत ब्रा तैयार की है. इन दिनों यूरोप में इसकी मांग जोर पकड़ रही है. हालांकि इसे बनाना बेहद कठिन है और ये अधोवस्त्र मंहगे भी है. इसकी कीमत सुनकर आप हैरान हो जाएंगे. जी हां, अधोवस्त्रों का एक सेट दो हजार पौंड (तकरीबन एक लाख 60 हजार रुपये) में मिलता है. बकौल जोंस, मैं कुछ नया करना चाहती थी. एक बार जब वह बालों का इस्तेमाल कर कोई परिधान डिजाइन कर रही थी, तभी उन्होने बालों से अधोवस्त्र बनाने की बात सोची. उसके बाद ही जोस बालों से ब्रा बनाने में जुट गई.

## चीन में बूढ़े बढ़े

बीजींग. हांगकांग में उम्रदराज लोगों की तादाद बढ़ रही है जबकि पहले के मुकाबले जन्म दर तेजी से घट है. 1981 में हांगकांग की जनसंख्या तकरीबन 52 लाख थी, जो पिछले साल बढ़कर 67 लाख हो गई. जनसंख्या में 1.3 फीसदी की दर से वृद्धि दर्ज की गई है. रिर्पोट में कहा गया है कि पिछले दो दशक में जन्म दर में तकरीबन 52 फीसदी की कमी आई है. 1981 में एक हजार महिलाओं पर नवजात शिशुओं की संख्या 1933 थी जबकि 2001 में इतनी ही महिलाओं पर 927 बच्चे थे.

## आदमी से कीमती है अमेरिकी कुत्ता

न्यूयार्क. अमेरिका में इनसान से ज्यादा कुत्तों की अहमियत है. यहां जारी एक न्यूज रिर्पोट में इसका खुलासा किया गया है. यहां ज्यादतर लोग सांस की बीमारी से पिडीत है. लेकिन इन बीमार लोगों के मुकाबले बचाव में लगे खोजी कुत्तों की चिकित्सा पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है.

न्यूयार्क डेली अखबार के मुताबिक कुत्तो के इलाज के लिए लोगों ने दिल खोलकर दान दिया है, लेकिन बीमार लोगों के बारे में न तो सरकार को चिंता है न ही बड़ी–बड़ी चैरिटी संस्थाओं ने इनके लिए धन जुटाने का प्रयास किया है.

## पुरूषों में महिलाओं की अपेक्षा अधिक दर्द सह सकने की क्षमता होती हैं

वाशिंगटन. महिलओं की अपेक्षा पुरूषों में शारीरिक दर्द और पीड़ा बर्दाश्त करने की क्षमता अधिक होती है. पुरूष तीव्र दर्द सह लेते है वहीं महिलाएं मामूली पीड़ा से ही परेशान हो जाती हैं इस मामले में हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पता चला है कि पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में पीड़ानाशक दवा तुरंत असर करती है. विज्ञानियों ने चूहों पर एक शोध के बाद बताया है कि जीआईआरके–2 नामक प्रोटीन की उपस्थित के कारण पुरूष तेज से दर्द बर्दाश्त कर लेते हैं और उनके शरीर पर दर्दनाशक दवाओं का असर धीरे–धीरे पड़ता है. नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस की ऑनलाइन संस्करण के मुताबि इस अध्ययन से पुरूष और महिलाओं के लिए अलग–अलग दर्दनाशक दवा बनाने में मदद मिलेगी.

## वंदेमातरम दुनिया का दूसरा सबसे लोकप्रिय गीत है

लंदन. भारत का राष्ट्र गीत 'वंदेमातरत' दुनिया का दूसरा लोकप्रिय गीत है. बीबीसी वर्ल्ड सर्विस द्वारा कराए गए सर्वेक्षण के मुताबिक आयरलैंड के राष्ट्र गान के बाद वंदे मातरम दुनिया में सबसे अधिक लोकप्रिय है. पाकिस्तान के राष्ट्रगीत 'दिल दिल पाकिस्तान' को तीसरा स्थान मिला है.

जिन दिनों देश अंगरेजो की गुलामी की जंजीर में जकड़ा हुआ था, इस गीत की रचना कर बंकिम चंद्र चटर्जी ने गुलाम भारतीयों की रंगों में आजादी प्राप्त करने का जज्बा भरा था. बंगाल ही नहीं हर भारतीय की जुबान से खुद ब खुद बंदेमातरम गीत निकलता था. 1950 में बनी फिल्म 'आनंद मठ' में भी इस गीता को शामिल किया गया. मालूम हो कि बंकिम चंद्र का 'वंदेमातरम' और रविद्र नाथ टैगोर द्वारा रचित 'जन गन मन' ने भारत के लोगों में देशभक्ति का जुनून भर दिया था. सर्वे में शामिल लोगों ने 'ए नेशन वन्स अगेन' को सबसे लोकप्रिय गीता करार दिया. 1841 में आयरलैंड के राष्ट्रभक्त थॉमस डेविस ने अंगरेजों से देश को मुक्त कराने के लिए इसी गीत के जरिए लोगों में देशभक्ति का जज्बा भर दिया था. इस ऑनलाइन सर्वे में 153 देशों के डेढ़ लाख से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया. यह सवेक्षण बीबीसी के 70 वर्ष पूरे होने पर किया गया. इन गीतों ने जॉन लेनन द्वारा रचित 'इमेजिन और क्वींस की 'बोहेमियन रैहप्सॉडी' जैसे मशहूर गीतों को पीछे छोड़ दिया है.

### इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जो आपके संज्ञान में हो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं. अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे. अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की. कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पत्रा–व्यवाहार के पते पर.

# MAHARISHI VIDYA MANDIR

ENGLISH MEDIUM (NURSERY TO X)

**AFFILIATED TO CBSE - NEWDELHI**

**SPECIAL FEATURES:-**

- ENGLISH CONVERSATION
- COMPUTER EDUCATION
- TRANSPORT FACILITY
- WELL -EQIPPED SCIENCE LAB
- EDUCATIONAL TOUR
- REGULAR T.M. PRACTICE AND VEDIC SCIENCE CLASSES
- COMPETITION-DEBATE, ELOCUTION, SCIENCE & G.K QUIZ, ART AND CRAFT

_ADDIMISSION OPEN FROM NURSERY TO EIGTH

**Contact: Principal,** M.V.M. Public School, Doorvani Nagar, Naini, Allahabad
Phone:2697029(O), 2645723(R)

Xtra Premium gives you
More Mileage and Savings

इंडियन ऑयल

**Indian Oil**

# XTRA Premium

**HI-OCTANE PETROL**

Extramileage. Extrasavings.